₹१००/- वार्षिक

दिव्य जीवन

''हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे।।

''ये सोलह नाम कलि के बुरे प्रभावों को नष्ट कर देते हैं। सारे वेदों में इससे बढ़ कर अन्य कोई साधन नहीं है। ये सोलह नाम उन आवरणों को दूर करते हैं जिन्होंने जीवों को आवृत कर रखा है। बादलों के हट जाने पर जिस तरह सूर्य विभासित हो जाता है, उसी तरह आवरण के दूर हो जाने पर परमात्मा अपनी महिमा में चमक उठता है।''

—**स्वामी शिवानन्द**

अक्तूबर २०१८

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

—स्वामी शिवानन्द

कलिसन्तरणोपनिषद्

परमात्मा का भजन किसी भी अवस्था में, शुद्ध अथवा अशुद्ध, जाने अथवा अनजाने में, सावधानीपूर्वक अथवा असावधानीपूर्वक—किसी भी तरह किया जाये, वह अवश्य ही वांछित फल प्रदान करता है। परमात्मा के नाम की महिमा तर्क-वितर्क अथवा बुद्धि से स्थापित नहीं की जा सकती। इसे केवल भक्ति, श्रद्धा तथा जप से ही अनुभव किया जा सकता है। प्रत्येक नाम में अनगिनत शक्तियाँ निहित हैं। नाम की शक्ति अमोघ है। इसकी महिमा अवर्णनीय है। भगवान् के नाम का प्रभाव तथा इसकी गुप्त शक्ति अथाह है।

उपर्युक्त विधि से ईश्वर के नामों के जप द्वारा आप ईश्वर-चैतन्य प्राप्त करें! ईश्वर के नामों के लिए आपमें सच्ची प्रीति उत्पन्न हो!

—स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन

Vol. XXIX	अक्तूबर २०१८	No. 7

उपनिषद्–सुधा बिन्दु

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।

(कठोपनिषद् : २/२/१५)

वहाँ (आत्मस्वरूप ब्रह्म में) सूर्य प्रकाशित नहीं होता है, चन्द्रमा एवं तारावृन्द भी नहीं चमकते हैं, न यह विद्युत् ही चमचमाती है, तो इस अग्नि की बात ही क्या है? उसके (ब्रह्म के) प्रकाशमान होने से ही यहाँ सब कुछ प्रकाशित है, उसके प्रकाश से ही यह सब कुछ विभासित है।

पूर्व-अंक से आगे :

शिवानन्दस्तोत्ररत्नमाला

सद्गुरुनवमणिमाला

(ज्ञानभास्कर महामहोपाध्याय श्री एस. गोपाल शास्त्री)

रुग्णानौषधदानतो द्रविणतो निस्स्वांश्च रक्षन् मुदा
दृश्यं सर्वमनित्यमेव गणयन् वैराग्यशक्त्याश्रितः।
त्यक्त्वा बन्धकमेषणात्रयमहो! निष्कृत्तपाशो गुरु-
र्धीरो धिक्कृतषड्रिपुर्विजयते लोकस्य भाग्योदयात् ।।५।।

५. सद्गुरुदेव ने रोगियों की औषधियों एवं निर्धनों की धन द्वारा सेवा करते हुए संसार की अनित्यता का अनुभव कर वैराग्य का आश्रय ग्रहण किया तथा एषणात्रय का त्याग कर षड् रिपुओं पर विजय प्राप्त की। आज वे समस्त विश्व के सौभाग्यस्वरूप विभासित हो रहे हैं।

श्रीमद्भारतजीविभाग्यमरुता द्वीपान्तराच्चालितो
व्योम्नाऽतीत्य सुपावनान् जनपदान् योगीशधाराधरः।
कारुण्यामृतभारनिर्भरवपुर्लोकस्य तापं हरन्
प्रालेयागतटेऽवतीर्य सततं ज्ञानामृतं वर्षति।।६।।

६. भारतवासियों के भाग्य-मरुत पर संचरण करते हुए योगीन्द्र-सद्गुरुदेव रूपी मेघ ने विभिन्न पावन जनपदों की यात्रा की, कारुण्यामृत के भार को अधिक वहन करने में असमर्थ होने के कारण वे हिमालय के मनोहारी प्रदेश में सुस्थित हो गए तथा यहाँ भवतापहरणार्थ ज्ञानामृत की सतत वृष्टि कर रहे हैं।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज के बहत्तरवें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में रचित

दुर्गापूजा सन्देश*

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

जिनसे इस समस्त जगत् का अस्तित्व है, उन परम करुणामयी माँ भगवती की जय हो! उन्हें मेरा बारम्बार नमस्कार है!

'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे...' माँ के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। मानव की उन्नति—भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही, अपनी जननी (मानवीय एवं आध्यात्मिक जननी) से दृढ़ता सहित जुड़ी हुई है। मनुष्य का मानवीय अंश लगभग पूरी तरह से ही अपनी माता के साँचे में ढला होता है, उसका आचरण, मानसिक बनावट, बौद्धिक गुणवत्ता, उसके समूचे व्यक्तित्व को ही माता द्वारा आकार दिया गया होता है। यही कारण है कि श्रुतियों में मनुष्य को अपनी माँ को भगवान् के रूप में देखने के लिए कहा गया है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में तो यह इससे भी अधिक है। माँ भगवती की सहायता के बिना साधक के लिए किंचित् भी आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं है। सर्वशक्तिमान् यक्ष, जिन्होंने अग्निदेव और वायुदेव को भी लज्जित कर दिया था, को अचानक अपने सामने से अदृश्य हुआ देख कर जब इन्द्रदेव किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े रह गये तब उनकी सहायतार्थ भगवती उमा आती हैं और उन्हें यक्ष के वास्तविक स्वरूप अर्थात् 'ब्रह्म' के विषय में बताती हैं (केन उपनिषद्)। देवी माँ ने जब जैसा कार्य करना होता है, तब उसके अनुसार वैसा ही रूप धारण कर लेती हैं—कभी मधुर एवं सौम्य और कभी उग्र एवं विनाशकारी; किन्तु अपने भक्तों के प्रति वे सदा ही करुणामयी और उदार हैं। देवीमाहात्म्य पढ़ें। देवी माया शक्ति है जो मनुष्य को निरन्तर इस गतिशील संसार-चक्र में बाँधती है। महामाया सर्वाधिक बुद्धिशील मनुष्य को भी भ्रमित करती है। तथापि वही है जो अपने उन भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाली है जो उसकी महिमा का गान करते हुए उसकी भक्ति में मग्न हैं। जो उनको प्रसन्न कर लेते हैं, उन पर वह समस्त ऐश्वर्य की वृष्टि करती हैं और जो उन्हें क्रोधित कर देते हैं, उनसे वह स्वयं को दूर कर लेती हैं। यदि आप राजा सुरथ और वैश्य समाधि की भाँति अपने सम्पूर्ण हृदय से उनसे प्रार्थना करेंगे तो वह आपको समस्त वरदान, यहाँ तक कि मोक्ष भी प्रदान कर देंगी। निश्चित रूप से इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

नवरात्रि के दिनों में समस्त भारत, माँ भगवती की आराधना करता है और अत्यन्त भक्तिभाव सहित पूजन करता है। प्रथम तीन दिनों में देवी के संहारक रूप अर्थात् माँ दुर्गा की पूजा की जाती है। आगामी तीन रात्रियों में उनके रचनात्मक पक्ष अथवा लक्ष्मी माता का पूजन किया जाता है। और अन्तिम तीन रात्रियों को, ज्ञान पक्ष अथवा माँ सरस्वती का आह्वान किया जाता है। दशम दिवस, 'विजयादशमी' अर्थात् विजय का दिवस मनाया जाता है। इस व्यवस्थित उत्सव का विशेष महत्त्व है। जब दुर्गा माता

---

*१९४८ की *'डिवाइन लाइफ' पत्रिका में से उद्धृत।*

की उपासना की जाती है तो वह सर्वप्रथम भक्त के मन में छिपी हुई कुप्रवृत्तियों को नष्ट कर देती हैं; फिर वे उसके शुद्ध मन में दैवी सम्पत अर्थात् उन गुणों को उत्पन्न कर देती हैं जो आध्यात्मिक प्रकटीकरण के प्रेरक हैं। उसके उपरान्त वे उसे वास्तविक ज्ञान प्रदान करती हैं, अन्ततः जिज्ञासु साधक एवं भक्त मोक्ष अथवा संसार पर विजय प्राप्त कर लेता है।

नवरात्रि का उत्सव गहन साधना करने के लिए पूरे वर्ष में सर्वोत्तम अवसर है। यह नव-दिवस सर्वाधिक पावन हैं। जब समस्त धरा पर सहस्रों लोग देवी माँ का नाम-स्मरण करते हों और उनकी महिमा के भजन-गान एवं पाठ करते हों, उस समय उत्पन्न होने वाले आध्यात्मिक स्पन्दनों की सशक्त लहर की किंचित् कल्पना तो करके देखें। वस्तुतः जहाँ देवी माँ का नामोच्चारण होता है, वहाँ समस्त देवता अपने सूक्ष्म रूपों में विद्यमान रहते हैं। वे सब आपको आशीर्वाद देंगे और आपके सहायक होंगे। यदि आप इन नवरात्रों में गहन साधना करें तो आपको अज्ञात स्रोतों से, ऋषियों और सिद्धों से अनमोल सहायता प्राप्त होगी। अत्यन्त निष्ठा सहित माँ से प्रार्थना करें; वे अत्यन्त सरलता से प्रसन्न की जा सकती हैं। (देवीमाहात्म्य के राजा की भाँति) उनसे तुच्छ लौकिक वस्तुएँ न माँगें, अपितु (वैश्य की भाँति) मोक्ष के लिए प्रार्थना करें। वे तो आपकी पुकार सुन कर तत्काल आने को तत्पर हैं; केवल आपको उनके स्वागत के लिए तत्पर रहना है। अपने मन की समस्त स्थूल अशुद्धियों को नष्ट करें और माँ को अपने हृदय रूपी स्वर्णसिंहासन पर आसीन करें! उनके चरणों में अपने तुच्छ अहं को समर्पित करते हुए प्रार्थना करें : ''आपकी ही इच्छा पूर्ण होगी। माँ! मेरी कोई इच्छा नहीं है।'' वे आपका हाथ पकड़ कर मोक्ष की ओर ले जायेंगी।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

दशहरे का सन्देश

दिव्य जननी श्री दुर्गा जी को नमस्कार जो सभी भूतों में बुद्धि, करुणा तथा सौन्दर्य के रूप में स्थित हैं, जो भगवान् शिव की अर्धांगिनी हैं, जो विश्व की सृष्टि, पालन तथा संहार का कार्य करती हैं।

माता के रूप में ईश्वर की उपासना के लिए दशहरा हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्योहार है। दुर्गा देवी ईश्वरीय माता का प्रतीक हैं। वे भगवान् की शक्ति हैं। दुर्गा के बिना शिव में कोई अभिव्यक्ति नहीं तथा शिव के बिना दुर्गा की कोई सत्ता नहीं। शिव दुर्गा की आत्मा ही हैं। दुर्गा तथा शिव एक ही हैं। भगवान् शिव साक्षी मात्र हैं, वे निष्क्रिय तथा परम कूटस्थ हैं। वे विश्व-लीला से प्रभावित नहीं होते। दुर्गा ही सब-कुछ करती हैं।

—स्वामी शिवानन्द

गायत्री मन्त्र—समस्त शक्तियों की शक्ति

(परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

नवरात्रि मानव के स्वभाव में दिव्यता के नूतन अनुभव एवं अभिव्यक्ति, सत्य एवं प्रेम के प्रकाश के प्रकटीकरण तथा आन्तरिक बुराइयों पर विजय प्राप्ति हेतु एक वार्षिक आह्वान है। सत्य, करुणा एवं सेवा की सकारात्मक शक्तियों द्वारा ही मनुष्यों के हृदयों से समस्त नकारात्मक तत्त्वों का उन्मूलन किया जा सकता है। घृणा, स्वार्थ एवं असत्य की आसुरी शक्तियाँ, दैवीय तत्त्वों यथा प्रेम, नि:स्वार्थता एवं सत्य के समक्ष टिक नहीं सकती हैं।

देवी की आराधना वैदिक अथवा तान्त्रिक विधियों द्वारा की जाती है। माँ शक्ति की आराधना बिना विस्तृत कर्मकाण्ड के परा पूजा, ध्यान एवं मन्त्र जप द्वारा भी की जाती है। अधिकांश व्यक्तियों के लिए आनुष्ठानिक पूजा की कठिन विधि से यह विधि अधिक उपयुक्त है। इसमें भाव अथवा श्रद्धा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं। सत्य के अगले किसी स्तर में तब तक प्रवेश नहीं पाया जा सकता है जब तक कि उससे निम्न स्तर की माँगों को पूर्ण नहीं किया जाता है। हम सूर्य एवं इसके प्रकाश को दो भिन्न वस्तुएँ नहीं मानते हैं। इसी प्रकार एक साधक अथवा उपासक ब्रह्म एवं उसकी शक्ति में भेद न करते हुए यह जानता है कि देवी स्वयं परब्रह्म-शक्ति ही है तथा देवी की कृपा से वह परम लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

जैसा कि पूर्वत: कहा गया कि एक साधक देवी की आराधना ध्यान एवं जप द्वारा कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक सच्चा, गम्भीर एवं श्रद्धावान् हो; तब माँ शक्ति प्रसन्न होती हैं एवं अपने अनुग्रह की वृष्टि करती हैं। साधक को नवरात्रि में गहन भाव के साथ देवी-मन्त्र का जप करना चाहिए। दिव्य नाम की महिमा एवं शक्ति का वर्णन विश्व के समस्त धर्मों में किया गया है। परन्तु यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हिन्दू धर्म में नाम-महिमा को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है कि यह स्वयं भगवद्प्राप्ति का एक विशिष्ट मार्ग बन गया है। भगवन्नाम-जप को एक सम्पूर्ण योग 'जप योग' माना गया है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में पिछली पाँच-छह शताब्दियों के सन्त-महापुरुषों द्वारा इसे अग्रणी स्थान पर लाया गया है तथा भगवद्-साक्षात्कार के चार पारम्परिक मार्गों से उच्च तो नहीं, परन्तु उनके समान स्थान दिया गया है।

मन्त्र वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित तथा सतत जप से ऊर्जस्वित वर्णों का एक समूह है जिसमें दिव्य नाद परिपूर्णरूपेण चैतन्य हुआ है। मन्त्र ध्वनि-प्रतीकों का वह समूह है जो एक विशिष्ट ध्वनि-सूत्र को प्रकट करता है तथा जिसका ऋषियों द्वारा गहन ध्यान के समय अन्त:प्राज्ञिक रूप में दर्शन किया गया। इन ध्वनि-प्रतीकों को मन्त्र-दीक्षा के माध्यम से योग्य शिष्यों को सौंपा गया जिन्होंने अपने शुद्ध संकल्प, दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धा से अभ्यास कर पुन: उसी अनुभव को प्राप्त किया जो उनके गुरु ने प्राप्त किया था। उन शिष्य-साधकों ने मन्त्र के माध्यम से दिव्य चैतन्य का अनुभव किया तथा अन्तत: इस दिव्य चैतन्य से परिव्याप्त हो वे इसके साथ एकाकार हो गये।

मन्त्र-साधना दो प्रकार से की जाती है; दोनों विधियों में श्रद्धा-विश्वास का तत्त्व विद्यमान है। परन्तु इनमें अन्तर भी है। एक पूर्णत: गूढ़ विधि है जिसमें मन्त्र-दीक्षा प्राप्त साधक जानता है कि यह मन्त्र रहस्यमय दिव्य शक्ति है जिसके सतत जप से दिव्य चैतन्य की प्राप्ति होगी। इस ज्ञान के साथ, वह दृढ़ निश्चय एवं संकल्पपूर्वक साधना में संलग्न होता है। अन्तत: अपने दृढ़ संकल्प (हठ) एवं सतत जप द्वारा वह भगवद्-साक्षात्कार करता है। दूसरी विधि में गहन श्रद्धा एवं भक्ति प्रमुख है। यहाँ भाव का प्राधान्य है। साधक मन्त्र सिद्धि की उचित विधि एवं विज्ञान पर निर्भर न रहते हुए अपने भाव की प्रबलता पर निर्भर रहता है जिससे अति शीघ्र ही मन्त्र पूर्ण चैतन्य हो जाता है। उसकी देवी के प्रति इतनी गहन भक्ति होती है कि वह आश्वस्त रहता है कि देवी के मधुर नाम के उच्चारण मात्र से उसके समस्त पाप तत्क्षण भस्मीभूत हो जायेंगे एवं शीघ्र ही परम तत्त्व की उपलब्धि होगी। पिछली कुछ शताब्दियों के सन्त-कवियों का ऐसा ही दृढ़ विश्वास था।

पाश्चात्य एवं पौर्वात्य राष्ट्रों के निवासियों में यही मौलिक अन्तर है; पाश्चात्य क्षेत्र का व्यक्ति बाहरी जगत् से अपनी इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षा करता है जबकि पूर्व का व्यक्ति अन्तरात्मा पर निर्भर रहता है। पाश्चात्यवासी बाह्य इन्द्रिय-जगत् से सुख-प्राप्ति का प्रयास करता है; पूर्वी क्षेत्र का व्यक्ति इन्द्रियों का प्रत्याहार कर स्वयं के भीतर उतरता है तथा आत्मानन्द का आस्वादन करता है। एक वैज्ञानिक प्रकृति को नियन्त्रित कर पदार्थ से शक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है परन्तु एक आध्यात्मिक व्यक्ति आत्मिक शक्ति, परम शक्ति के सम्मुख इस जगत् की समस्त शक्तियों को नगण्य मानता है। इस राष्ट्र के एक साधक के लिए समस्त शक्ति आत्मा में ही निहित है। आत्मा का स्वरूप सर्वशक्तिमत्ता है। आत्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है।

यह शक्ति प्रथमत: नाद के रूप में अभिव्यक्त होती है जिससे समस्त सृष्टि का उद्भव हुआ है। नाद से यह समस्त दृश्य प्रपंच प्रकट हुआ है। परम तत्त्व का यह नाद-स्वरूप ही वेदों में समाहित है। वेदों का प्रत्येक मन्त्र अनन्त-असीम शक्ति का भण्डार है। इस राष्ट्र में, एक सच्चा साधक इसी मन्त्र-शक्ति पर निर्भर रहता है। यही उसकी प्रशान्तता एवं धीरता का रहस्य है। इन सब मन्त्रों में गायत्री मन्त्र सर्वाधिक शक्तिशाली है। विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना हेतु विभिन्न गायत्री मन्त्र हैं, साधक अपने इष्ट-देवता का गायत्री मन्त्र अथवा मुख्य गायत्री मन्त्र का जप हेतु चयन कर सकता है।

हिन्दू समाज के चार में से तीन वर्णों के व्यक्तियों के लिए 'गायत्री मन्त्र' ही उनका प्राण एवं आत्मा है। जिस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषदों के उच्च दर्शन का सार है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र वेदों की शक्ति एवं ज्ञान-वैभव का सारभूत तत्त्व है। अत: गायत्री महत्-शक्ति है। इस मन्त्र की अद्वितीय महत्ता का ज्ञान इस तथ्य से हो सकता है कि हिन्दू समाज के तीन वर्णों एवं आश्रमों के व्यक्तियों को इसके जप का निर्देश दिया गया है। गायत्री मन्त्र सभी प्रकार के साधकों के लिए स्वीकरणीय है क्योंकि इसका जप देवी, भगवान् नारायण, सूर्य तथा निर्गुण ब्रह्म की भी आराधना-उपासना स्वरूप है।

ब्रह्मचारी का ओज-तेज गायत्री जप में निहित है; गृहस्थ का आश्रय एवं समृद्धि गायत्री ही है; वानप्रस्थ का बल भी गायत्री मन्त्र ही है। इस प्रकार एक हिन्दू के लिए उपनयन के क्षण से संन्यास की महिमामय अवस्था में प्रवेश तक गायत्री मन्त्र ही उसका मार्गदर्शक, मित्र, आश्रय एवं शक्ति है। उसके लिए गायत्री मन्त्र सर्वस्व है;

मन्त्र दीक्षा उसके आध्यात्मिक जीवन के प्रारम्भ की सूचक है। उसके जीवन की चार प्रमुख वस्तुओं 'गायत्री, गीता, गुरु एवं गंगा' में गायत्री को प्रथम स्थान प्राप्त है।

इसकी महत्ता इतनी अधिक है कि गायत्री मन्त्र के जप को प्रत्येक हिन्दू के लिए अनिवार्य दैनिक साधना बताया गया है। व्यक्ति के कुलदेवता कोई भी हों, इष्टदेवता कोई भी हों, गायत्री मन्त्र का दैनिक जप तथा इसके उच्चारण के साथ अर्घ्य-दान का आदेश प्रत्येक हिन्दू के लिए अवश्यमेव पालनीय है। गायत्री मन्त्र की महिमा एवं शक्ति के विषय में ऐसा कहा जाता है कि गायत्री जप के साथ मात्र एक बार अर्घ्य-दान की आध्यात्मिक शक्ति बत्तीस करोड़ देवी-देवताओं की शक्ति के समान है।

परन्तु इन दिनों आधुनिक सभ्यता-संस्कृति तथा व्यस्ततम जीवन के कारण विशेषतया नगरीय क्षेत्रों में अधिकांश व्यक्ति त्रिकाल सन्ध्या करने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। यह अत्यन्त दुःखद अवस्था है। प्रिय पाठकवृन्द, दिव्य गायत्री मन्त्र की अद्भुत शक्ति को जानिए। इस मन्त्र के रूप में प्राप्त अमूल्य धरोहर की महत्ता को समझिए। प्राचीन युग के ऋषियों द्वारा विरासत रूप में प्राप्त इस दिव्य शक्ति की उपेक्षा नहीं करिए। यही वास्तविक शक्ति है जिसके समक्ष विद्युत्, रेडियोएक्टिविटी एवं आणविक शक्ति आदि तुच्छ हैं। नवरात्रि से गायत्री मन्त्र के दैनिक जप का प्रारम्भ करिए तथा इससे प्राप्त अद्भुत दिव्य शक्ति का स्वयं अनुभव करिए। यही समस्त शक्तियों की वास्तविक शक्ति है। यह आपकी सभी संकटों से रक्षा करेगी, समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्ति हेतु असीम बल प्रदान करेगी तथा आपको प्रकाश, शान्ति एवं आनन्द के शिखर पर पहुँचायेगी।

माँ पराशक्ति आपको शक्ति एवं ज्ञान प्रदान करें। देवी भगवती आपके समस्त सद्कार्यों को सफलता से आशीर्वादित करें।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

गायत्री-मन्त्र

ॐ। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थ—हम उस महिमामय ईश्वर का ध्यान करते हैं, जिसने इस संसार को उत्पन्न किया है, जो पूजनीय है, जो ज्ञान का भण्डार है, जो पापों तथा अज्ञान को दूर करने वाला है—वह हमें प्रकाश दिखाये और हमें सत्पथ पर ले जाये।

वह प्रकाश क्या है? अभी तुममें देहाध्यास है तथा ऐसी बुद्धि है, जिससे तुम यह समझते हो कि यह शरीर ही तुम्हारा अपना है। आत्मा को कोई महत्त्व नहीं देते। अब तुम वेदों की माता गायत्री से प्रार्थना कर रहे हो कि वह तुम्हें शुद्ध, सत्त्व बुद्धि दे, जो तुम्हें '**अहं ब्रह्मास्मि**' का बोध कराने में समर्थ हो। '**अहं ब्रह्मास्मि**' का अर्थ है कि मैं ब्रह्म हूँ। गायत्री का यह अद्वैत-अभिवाचक अर्थ है। योग के मार्ग में अनुभवी लोग यह अर्थ लगा सकते हैं—मैं प्रकाशों में वह श्रेष्ठ प्रकाश हूँ, जो बुद्धि को प्रकाशित करता है।

—स्वामी शिवानन्द

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तपस्या

(परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

जिस प्रकार जैतून का बीज जैतून के एक विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होता है, विचार स्वयं को कार्य में अभिव्यक्त करता है, संकल्प निर्णय में परिणत होता है उसी प्रकार डिवाइन लाइफ सोसायटी अपने संस्थापक सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तपस्या का अभिव्यक्त रूप है। यह संस्था आत्मनिष्ठ सन्त श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तपस्या तथा उनकी चेतना की एकाग्रता की बाह्य अभिव्यक्ति है; विश्व के इतिहास में उनके समान महापुरुष को खोज पाना अत्यन्त कठिन है।

हमें वेदों-उपनिषदों में बताया गया है कि भगवान् ने तप किया—**तपोतप्यत्** —स्वयं को पूर्ण एकाग्र कर उन्होंने सृष्टि के प्राकट्य की सम्भावना को देखा। आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि भगवान् किस प्रकार की तपस्या कर रहे थे। हम सब यह सोचने के अभ्यस्त हैं कि समुचित वस्त्र नहीं पहनना तथा भोजन, शयन, वार्तालाप आदि का त्याग करना तपस्या है। वास्तव में तपस्या से अभिप्राय चेतना की एकाग्रता है। हमें भगवान् की तपस्या का यही अर्थ समझना है जो उन्होंने इस विशाल सृष्टि की संकल्पना से पूर्व की; उनकी दृष्टि में उनकी यह रचना सर्वरूपेण पूर्ण थी।

उपनिषद् में ऐसा वर्णित है कि जब भगवान् ने अपनी सृष्टि को देखा तो अनुभव किया, ''बहुत अच्छा कार्य, बहुत अच्छा कार्य।'' ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि उन्होंने स्वयं अपनी पीठ थपथपाई। भगवान् अपनी एकाग्रता के परिणाम 'इस विश्व' की रचना से पूर्णतया सन्तुष्ट थे। यह बहुविध अनेकरूपता जिसे हम देश-काल से संश्लिष्ट सृष्टि कहते हैं, भगवदीय चेतना की एकाग्रता से संरचित है।

इस लघु-ब्रह्माण्ड अर्थात् इस विश्वव्यापी संस्था डिवाइन लाइफ सोसायटी के साथ भी ऐसा ही है। यह केवल शिवानन्दनगर में नहीं है, यह सर्वव्यापी आत्मा है। स्वामी शिवानन्द जी महाराज कहते थे कि डिवाइन लाइफ सोसायटी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में है। डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखा स्थापित करने हेतु ईंट, पत्थर, स्टील, सीमेण्ट की आवश्यकता नहीं है। आपके भाव की एकाग्रता, उद्देश्य की समग्रता, संकल्प का स्थैर्य तथा दृष्टिकोण की परिपूर्णता ही डिवाइन लाइफ सोसायटी तथा इसकी शाखाओं की नींव हैं।

यह कहना पर्याप्त होगा कि स्वामी शिवानन्द जी महाराज पूर्णतया आध्यात्मिक थे। वे शुद्ध आत्मा के मूर्तिमन्त विग्रह थे, तथा उनमें आत्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। उनकी गतिविधियों की बाह्यता तथा लेखन की विविधता उनकी आत्मा की ही अभिव्यक्ति है। यदि सम्पूर्ण विश्व आत्मा की ही अभिव्यक्ति है तो हम कह सकते हैं कि डिवाइन लाइफ सोसायटी भी स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तपस्या का अभिव्यक्त रूप 'एक लघु-ब्रह्माण्ड' है। जहाँ तपस्या नहीं है, वहाँ सफलता नहीं है। आपको सर्वत्र सफलता प्राप्ति के इस रहस्य को जानना होगा। गहन तपस्या ही जीवन के समस्त क्षेत्रों में सभी प्रकार की सफलता का मार्ग है। व्यापार, उद्योग, ऑफिस कार्य, प्रबन्धन आदि सभी क्षेत्रों में तपस्या आवश्यक है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि तपस्या एकान्तवासी साधुओं का कार्य है। यह तो इस विशाल सृष्टि में विश्वात्मा ही अपनी आवश्यकता के रूप में अभिव्यक्त है।

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम ब्रह्माण्ड से बाहर हैं, भगवान् कहीं ऊपर विराजमान हैं तथा यह विश्व हमसे

बाहर है। यह विश्व हमसे बाहर नहीं है और न ही भगवान् कहीं ऊर्ध्वलोक में हैं। ऊपर-नीचे, भीतर-बाहर के विचार हमारी चिन्तन-शैली के दोष के कारण उत्पन्न होते हैं। मानव मन की संरचनात्मक पद्धति में एक मूल दोष है जिसके कारण यह तब तक कुछ भी उचित रूप में नहीं देख पाता जब तक इसे तपस्या से परिशुद्ध न कर लिया जाए। जैसा कि मैंने पूर्वत: बताया है कि तपस्या पूर्ण वैराग्य, इच्छा-राहित्य है क्योंकि आत्मा किसी भी वस्तु की आकांक्षा नहीं करता है, इसी में सब कुछ समाहित है।

स्वामी श्री शिवानन्द जी महाराज का भक्त, डिवाइन लाइफ सोसायटी का सदस्य अथवा इसकी किसी शाखा का प्रमुख स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ही एक प्रतीक है। जिस प्रकार प्रत्येक के हृदय में भगवान् निवास करते हैं, उसी प्रकार आपके हृदयों में स्वामी शिवानन्द जी महाराज वास करते हैं। यदि आत्मा की उपेक्षा कर आप सोचते हैं कि केवल कार्य ही महत्त्वपूर्ण है; यदि आप यह भूल जाते हैं कि आप मूलत: एक आध्यात्मिक वीर हैं तथा बाह्यत: एक कार्यशील व्यक्ति हैं; यदि आप भगवान् के अस्तित्व को विस्मृत कर स्वयं को कर्ता मानकर, कार्य में ही व्यस्त रहते हैं तो आपको अन्तत: असफलता ही प्राप्त होगी।

अनेक व्यक्ति शिकायत करते हैं, ''मैंने इतना कार्य किया है। इसका कोई परिणाम नहीं दिखता है।'' आपको उचित परिणाम क्यों नहीं प्राप्त होता? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपने कर्मयोग की भावना से कार्य को समुचित रूप में नहीं किया है। शुद्ध आत्मा की कार्य में अभिव्यक्ति ही कर्मयोग है। आपकी आध्यात्मिक परिपूर्णता का प्राचुर्य ही आपके कार्य-निष्पादन के रूप में प्रकट होता है। आपके कार्य के रूप में आप स्वयं ही बाहर देखे जाते हैं। इस विश्व में आप जो भी कार्य करते हैं, वह आपके हाथों एवं पैरों द्वारा किया गया कार्य नहीं है। यह आपके स्वयं के द्वारा किया गया है। आप स्वयं अपने कार्य में हैं। यदि आप अपने कार्य में नहीं हैं तो ऐसा कार्य आपको किसी भी प्रकार सन्तुष्ट नहीं करेगा।

परन्तु हम प्राय: कुछ न कुछ प्राप्ति की आकांक्षा से कार्य करने वाले व्यक्ति हैं। हम कार्य धन, ख्याति, पद आदि की प्राप्ति हेतु करते हैं। मुक्ति के भाव से इसे कर्म नहीं कहा जा सकता है। यदि कार्य बन्धन में डालता है, तो इसे नहीं किया जाना चाहिए। इस संसार में कौन बन्धन चाहता है? परन्तु यदि आप कहते हैं कि समस्त कार्य एक अभिशाप है; तथा यह कष्ट एवं पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ नहीं देता है तो इसका अर्थ यह है कि कार्य आपके हृदय की गहराई से सम्पन्न नहीं किया गया है। कुल मिलाकर बात इतनी है कि आप कार्य में नहीं हैं। आप कार्य कर रहे हैं, परन्तु आप कार्य में नहीं हैं; जिस प्रकार आपने कमीज पहन रखी है परन्तु आप कमीज नहीं हैं। आप अपने वस्त्रों की कलात्मकता एवं सौन्दर्य से सुन्दर दिख रहे हैं, परन्तु भीतर से आप एक दुर्बल शक्तिहीन प्राणी हैं। वस्त्र आप नहीं हैं। आपका बाह्य व्यवहार आपकी वास्तविकता नहीं है। जो आप हैं; उसे आपके कार्य के रूप में अभिव्यक्त होना चाहिए। आप स्वयं एक प्रकार के तथा आपका कार्य अन्य प्रकार का नहीं हो सकता है। आप स्वयं कार्य हैं।

अत: प्रत्येक को यह जानना चाहिए कि वह क्या है? क्या आप एक दीन-हीन व्यक्ति हैं? क्या आप इस विश्व में एक अवांछनीय व्यक्ति हैं अथवा आप शुद्ध आत्मा के प्रतिनिधि हैं? क्या आप विश्वास करते हैं कि भगवान् सर्वत्र हैं? यदि वे सर्वत्र हैं, तो वे सब कुछ भी हैं। जो सर्वत्र है, वह निश्चित रूप से सब कुछ होगा ही। इसलिए जिसे आप अपने नेत्रों से देख रहे हैं, वह विश्व नहीं है; यह उन सर्वशक्तिमान् की भुजाओं एवं अंगुलियों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। भगवद्गीता के वचनों का स्मरण करिए—

सर्वत: पाणिपादं तत् सर्वतोक्षिशिरोमुखम्।
सर्वत: श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।

(भ. गी. १३-१३)

यहाँ जो ये सिर आप देख रहे हैं, ये सब उन सर्वशक्तिमान् विराट् पुरुष के ही मस्तक हैं। ऐसा मत सोचिए कि विराट् पुरुष गगन पर कहीं विराजमान हैं और आप उनसे भिन्न हैं। आपके नेत्र उनके नेत्र हैं। वे आपके नेत्रों से देख रहे हैं, आपके मस्तिष्क के माध्यम से चिन्तन कर रहे हैं, आपके पैरों से वे चल रहे हैं, आपकी अंगुलियों से वे ही लिख रहे हैं। क्या आप इस सत्य को स्वीकार कर सकते हैं? भगवान् का अर्जुन को **'निमित्त मात्र भव सव्यसाचिन्'** (भ. गी. ११-३३) कहने का यही अभिप्राय है—''मैं सब कुछ कर चुका हूँ। तुम मात्र एक निमित्त की भाँति कार्य करो।'' क्या किसी के लिए अपनी चेतना को पूर्ण एकाग्र कर यह अनुभव कर पाना सम्भव है कि उसके नेत्र भगवान् के नेत्र हैं? इस प्रकार विश्व को उसी दृष्टि से देखना उचित समझा जायेगा जिस दृष्टि से भगवान् स्वयं इसे देखते हैं। आप यह भवन देखते हैं, वह वृक्ष देखते हैं, सूर्य, चन्द्र एवं तारे देखते हैं, आप सड़क एवं बाजार देखते हैं; और भगवान् भी इन सब वस्तुओं को देख रहे होंगे। भगवान् भी यह देख रहे होंगे कि यहाँ एक भवन है, वहाँ एक सड़क है। परन्तु क्या आप ऐसा मानते हैं कि आपके तथा भगवान् के इस भवन को देखने में एक अन्तर है? वे इसे स्वयं के रूप में देखते हैं, जैसा कि ईंटें स्वयं को यह भवन मानती हैं। ईंट, सीमेण्ट तथा अन्य सामग्री के बिना भवन का अस्तित्व ही नहीं है। यह आपकी एवं भगवान् की दृष्टि के मध्य अन्तर है। आप देखते हैं, भगवान् भी देखते हैं। इनमें क्या अन्तर है? किसकी दृष्टि उचित है? क्या भगवान् की दृष्टि उचित है अथवा आपकी? यदि आपसे इस प्रकार का प्रश्न पूछा जाये तो आप अत्यधिक विस्मित हो जायेंगे; आप इसका उत्तर नहीं दे सकते हैं। क्या वस्तुओं को देखने में आप सही हैं अथवा भगवान् सही हैं? क्या आप सर्वत्र गन्दगी, मलिनता, बुराई, निरर्थक वस्तुएँ देखते हैं? क्या भगवान् भी इन्हें देखते हैं? अपने हृदय पर हाथ रखिए और देखिए।

श्रीमद्भगवद्गीता के ग्यारहवें अध्याय में महान् परिपूर्णता 'विश्वरूप' का दर्शन वर्णित है। वहाँ सब कुछ देखा गया। वहाँ क्या देखा गया? क्या वह गन्दगी, मलिनता, निर्धनता, रोग, अस्पताल आदि थे? विराट् स्वरूप में क्या देखा गया? आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि आप इस प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दे सकते हैं। वहाँ सौन्दर्य, परिपूर्णता, भव्यता, अवर्णनीय आनन्द था। परन्तु उसमें वह सब भी समाहित था जिन्हें आप इनका विपरीत मानते हैं। क्या अद्भुत आश्चर्य!

मैंने पूर्वत: बताया कि श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एक आध्यात्मिक गुरु थे। जनमानस में वस्तुओं के प्रति इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रकट करने हेतु ही उन्होंने जीवन व्यतीत किया एवं अथक कार्य किया। उनका उद्देश्य मात्र कुटीर-निर्माण, अतिथियों को आमन्त्रण, पुस्तक-लेखन तथा विक्रय नहीं था। यह उनका उद्देश्य नहीं था। ये मानवता के अध्यात्मीकरण, उसकी सुप्त आत्मा के जागरण के उनके भव्य एवं महान् उद्देश्य के मात्र बाह्य रूप हैं। वे मानवता को यह कहकर जाग्रत करना चाहते थे, ''देखिए, आप निद्रामग्न हैं। इस स्वप्न से जागिए। जब आप इस स्वप्न से जागेंगे तो आप वास्तविकता जान पायेंगे और फिर आपको अधिक निर्देश देने की आवश्यकता शेष नहीं रहेगी।''

आप जितनी मात्रा में भगवान् के अपनी सृष्टि के प्रति दृष्टिकोण को स्वयं में विकसित कर पायेंगे, उतनी ही मात्रा में आध्यात्मिक होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को ईश-मानव बनने की आकांक्षा करनी चाहिए। आपको यह प्रण लेना चाहिए, ''मैं ईश-मानव बनना चाहता हूँ। मैं एक दीन-हीन की भाँति इस संसार से नहीं जाना चाहता हूँ। मैं ऐसे क्यों जाऊँ? मैं भी अन्य व्यक्तियों के समान अच्छा व्यक्ति हूँ। मैं क्यों ईश-मानव नहीं बनूँ? मुझमें क्या कमी है? अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर

तथा जो बाहर है, वही मेरे भीतर है; ऐसा जानकर मैं अभी स्थिति को ठीक कर दूँगा।''

बाह्य एवं भीतर दोनों सर्वव्यापकता में एकीभूत होते हैं। हम स्वयं को देखने के लिए अपने शरीर को देखते हैं तथा विश्व को देखने के लिए बाहर देखते हैं। क्या आप इन दोनों को एक वैश्विक दृष्टि में अन्तर्विष्ट कर सकते हैं? वही दिव्य-दर्शन होगा। वही भगवद्-दृष्टि है। यह स्वामी शिवानन्द जी महाराज का उपदेश था।

बहुत कम व्यक्ति उन्हें समझ पाये। उनके तपस्या के दिनों में उनके निकटस्थ व्यक्ति भी उन्हें समुचित रूप में नहीं समझ पाये। अनेक व्यक्ति सोचते थे कि वे एक विचित्र प्रकार के व्यक्ति थे। सन्त-महापुरुष कभी-कभी अत्यन्त विचित्र प्रकार के मनुष्य प्रतीत होते हैं। उनके व्यवहार को समझ पाना कठिन होता है। वे आज एक बात कहते हैं तथा अगले दिन दूसरी बात कहते हैं। भगवान् आज एक कार्य करते हैं, अगले दिन एक भिक्षु राजा बन जाता है और उसके अगले दिन एक राजा भिक्षु बन जाता है। क्या ये जीवन के विरोधाभास हैं? नहीं। भगवान् क्या कर रहे हैं?

एक बार एक महात्मा सड़क पर चल रहे थे। उस राज्य का राजा उसी मार्ग से निकला। राजा ने महात्मा से कहा, ''प्रणाम महात्मन्! कृपया राजसभा में आइए। मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।''

''क्या प्रश्न है'', महात्मा ने पूछा।

''भगवान् इस समय क्या कर रहे हैं?'' यह राजा का प्रश्न था।

राजा सिंहासनारूढ़ था तथा महात्मा भूमि पर बैठे थे। महात्मा ने कहा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि आप मुझसे प्रश्न पूछ रहे हैं तथा मुझे उसका उत्तर देना है। इसका अभिप्राय हुआ कि आप एक शिष्य के स्थान पर हैं तथा मैं गुरु के पद पर हूँ। शिष्य सिंहासनारूढ़ है एवं गुरु भूमि पर बैठे हैं। क्या यह उचित है?''

राजा ने तुरन्त कहा, ''कृपया आप यहाँ बैठिए।'' उसने महात्मा को सिंहासन पर बैठाया तथा स्वयं भूमि पर बैठा। इस प्रकार अब राजा भूमि पर थे एवं महात्मा सिंहासनारूढ़ थे।

महात्मा ने कहा, ''भगवान् यही कर रहे हैं। जो निम्न स्थिति में है, उसे एक क्षण में उच्च स्थान प्रदान कर देते हैं तथा जो उच्च स्थान पर है, उसे एक क्षण में निम्न स्थान पर ले आते हैं। यह आपके प्रश्न का उत्तर है।''

किसी को भव्य ऊँचाइयों तक उन्नत करना और फिर भूमि पर ले आना, भगवान् के ये कार्य विरोधाभासी नहीं हैं। ये विकास की प्रक्रिया में उनकी सार्वभौमिक आवश्यकता के अभिन्न अंग हैं। पूर्वस्थिति का नाश तथा नवीन स्थिति का जन्म ही विकास है। इसलिए प्रत्येक प्राणी की अस्तित्व के निम्नतर स्तर से उच्चतर स्तर की अग्रगामी यात्रा में जन्म एवं मृत्यु आवश्यक प्रक्रियाएँ हैं। यह विकास भीतर, बाहर, सर्वत्र घटित हो रहा है।

यह कहना पर्याप्त होगा कि आध्यात्मिकता ही सर्वत्र सब कुछ है। हमें आध्यात्मिकता एवं सांसारिकता में भेद नहीं करना चाहिए। यह भगवान् एवं संसार में भेद करने के समान होगा। भगवान् आध्यात्मिक हैं, एवं संसार ऐसा नहीं है; इसका अर्थ यह नहीं है कि ये दोनों भिन्न हैं। तब तो ऐहिक जगत् भगवदीय चेतना से पूर्णत: पृथक्, विलग हो जायेगा। नहीं, ऐसा नहीं है। कार्य एवं विचार, भावना एवं प्रस्तुति अभिन्न हैं। भगवान् श्री कृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में कहते हैं, ''**मत्त: परतरं नान्यत् किंचिदस्ति**—मुझसे बाहर कुछ नहीं है (भ. गी. ७-७)।'' यदि भगवान् के बाहर तथा परे कुछ नहीं है, तो महाभारत युद्ध में सभी कार्य कौन कर रहा है? भगवान् श्री कृष्ण के कार्य वे स्वयं ही थे। जो मैंने कुछ क्षण पूर्व कहा, पुनः कह रहा हूँ । यदि आप स्वयं अपने विचार, भावनाएँ एवं कार्य हैं, तो आप सर्वत्र प्रसन्नता एवं आनन्द प्राप्त करेंगे।

प्रत्येक साधक के लिए प्रसन्न होना अनिवार्य है। यह प्रसन्नता बैंक बेलेंस, धन-सम्पदा, पद-अधिकार से नहीं प्राप्त

हो सकती है; क्योंकि ये सभी वस्तुएँ कृत्रिम रूप में एक व्यक्ति से बाह्यत: सम्बद्ध हैं तथा इन्हें किसी भी क्षण वापिस लिया जा सकता है। पद-अधिकार, धन-सम्पदा सदैव नहीं रहते हैं परन्तु आप सदैव रहते हैं। इस संसार से जाते समय आप पद-अधिकार आदि साथ नहीं ले जा सकते हैं। आप जैसे आये थे, वैसे ही वापस जायेंगे। इस ब्रह्माण्ड के सर्वोच्च न्यायाधीश भगवान् के सम्मुख आप पूर्णत: अनावृत ही होते हैं। भगवान् के पास जाने पर जब आपसे यह पूछा जायेगा कि आपने धरा पर क्या किया? आप क्या उत्तर देंगे? क्या आप ऐसा कहेंगे, ''मैं प्रधानमन्त्री था।'' ''मैं एक लखपति था।''

कौशितकी उपनिषद् में हमें बताया गया है कि वहाँ जाने पर आपसे यह प्रश्न पूछा जायेगा। आपको ब्रह्मलोक ले जाया जायेगा तथा प्रश्न पूछा जायेगा, ''आपने धरा पर क्या किया है ?'' क्या किसी में यह कहने का साहस है कि आपको विश्व में अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजने वाले महान् न्यायाधीश के विधान का आपके द्वारा पालन हुआ है।

आप यहाँ आत्मा के प्रतिनिधि के रूप में आये हैं। आप एक अन्य शासन-व्यवस्था से सम्बन्धित हैं जो वस्तुओं के वैश्विक संचालन की व्यवस्था है। आप वहाँ से उसके आदेशों-अनुदेशों के पालनार्थ यहाँ धरा पर भेजे गये हैं। अत: जिस सीमा तक आत्मा के प्रतिनिधियों के रूप में आप अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहे हैं, उस सीमा तक आप सफल होंगे तथा पुन: वहाँ स्वीकार किये जायेंगे। बाइबिल कथा के अनुसार अतिव्ययी पुत्र को स्वर्ग में परमपिता द्वारा पुन: स्वीकार किया जायेगा। इसी प्रकार भगवान् आपको हृदय से लगायेंगे एवं स्वीकार करेंगे। परन्तु यदि आपने स्वार्थ से परिपूर्ण एक भ्रमित एवं निराश व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत किया है, तो आप यहाँ से दीन-हीन ही जायेंगे।

जब आप इस संसार में आये, अपने साथ क्या लाये तथा यहाँ से जाते समय अपने साथ क्या ले कर जायेंगे? ऐसा कैसे सम्भव है कि आप इस बीच की अवधि में इतने महत्त्वपूर्ण बन गये हैं? वह महत्ता जो जन्म के समय आपके साथ नहीं थी और न ही मृत्यु के समय आपके साथ रहेगी; इन दोनों के बीच की अवधि में कहाँ से हो सकती है? इस अवधि में भी वह महत्ता नहीं है। आप भ्रमित अवस्था में हैं।

हम सब भ्रमपूर्वक ऐसा सोचते हैं कि यहाँ हमारा कुछ मूल्य एवं महत्ता है। यदि ऐसा है तो इस संसार को छोड़ते समय वह मूल्य-महत्ता हमारे साथ रहता। आप एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं, यह सोचकर क्या आप यहाँ से सन्तुष्ट हो कर जायेंगे? भ्रमित मत होइए। भगवान् की पूर्णता के विषय में हमारी धारणा क्षुद्र है।

ऐसा कहा जाता है कि जब विशाल जहाज टाइटेनिक अटलांटिक महासागर में डूब रहा था, एक अमेरिकन लखपति अपने केबिन में गया तथा रात्रि-भोज की विशेष पोशाक पहनने लगा।

अन्य यात्रियों ने पूछा, ''आप अभी यह वस्त्र क्यों पहन रहे हैं? हम सब डूब रहे हैं।''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''क्योंकि मैं भगवान् के पास एक निर्धन व्यक्ति की तरह नहीं जाना चाहता हूँ। मैं एक लखपति की भाँति जाऊँगा।''

स्वयं के तथा भगवान् के विषय में हमारी यह धारणा है। रात्रि-भोज की पोशाक पहनने का क्या औचित्य है? उसने कहा, ''मैं भगवान् के समक्ष एक शिष्ट-कुलीन व्यक्ति दिखना चाहता हूँ।'' मानव एवं भगवान् के सम्बन्ध के विषय में हमारे इस प्रकार के विचार हैं।

विनयी-अहंकारहीन व्यक्ति धन्य हैं क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य उनके लिए ही है। वे भौतिक सम्पदा के सम्बन्ध में निर्धन हो सकते हैं, परन्तु आत्मिक सम्पदा के सम्बन्ध में नहीं। आपके पास एक रुपया नहीं होने पर भी आप भगवदीय चेतना से परिपूर्ण हो सकते हैं; और तब आपके पास सब कुछ स्वयमेव आयेगा। यदि आत्मा किसी वस्तु की माँग करता है,

वह स्वयमेव आपके पास आयेगी। भगवान् कालातीत शाश्वत अस्तित्व हैं तथा वे आपकी इच्छित वस्तु प्रदान करने में समय नहीं लेते हैं। वे आपके उच्चाधिकारी की भाँति नहीं हैं जो कहता है, ''कल आइए, मैं विचार करूँगा।'' वे इस प्रकार के प्रशासक नहीं हैं। उनके लिए आगामी कल का अस्तित्व नहीं है। वे शाश्वत हैं। अभी माँगिए, और अभी इसी क्षण प्राप्त होगा। क्या आप इस प्रकार का विश्वास रखते हैं?

स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ऐसा ही विश्वास था। लोग आ कर उनसे पूछते थे, ''स्वामी जी! आप इतने बड़े आश्रम को कैसे चला रहे हैं?''

वे कहते थे, ''ऊपर से वर्षा हो रही है।'' वे ऐसा नहीं कहते थे कि क्षैतिज (horizontally) रूप में व्यक्तियों से दान प्राप्त होता है। ''लम्बवत् (vertically) रूप में गिर रहा है। ऊपर से वर्षा हो रही है'', वे ऐसा ही कहते थे। अन्य व्यक्तियों में ऐसी दृष्टि दुर्लभप्राय है।

हमारा निर्वाह धनी व्यक्तियों की दानराशि से नहीं, अपितु भगवद्-कृपा-वृष्टि से होता है। यदि यह कृपा-वृष्टि न हो तो यह क्षैतिज सम्बन्ध किसी भी क्षण समाप्त हो सकते हैं। अत: किसी भी बाह्य, दृश्यमान, इन्द्रियग्राह्य वस्तु पर विश्वास नहीं करें; अपितु उन पर विश्वास करें जो आपकी आत्मा हैं, जिनके द्वारा आपका सृजन हुआ है तथा जिनमें आपको लीन होना है।

हमें श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज जैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए। उनका जीवन महान् तपस्या का जीवन था। जब वे बारह वर्षों के लिए स्वर्गाश्रम में रह रहे थे, उन्होंने किसी से भी मित्रता न रखने की तपस्या की। वे अपने आसपास के किसी व्यक्ति को नहीं जानते थे। वे उच्च कोटि के त्यागी थे। जब वे गंगा जी के इस किनारे आये तो उनके पास बैठने को भी स्थान नहीं था। वे कहाँ बैठते? उस समय तक डिवाइन लाइफ सोसायटी अस्तित्व में नहीं आयी थी। यहाँ एक गोशाला थी। कोई नहीं जानता था कि वह गोशाला किसकी थी। जब मैं यहाँ आया तो मैंने देखा कि वही गोशाला आश्रम के रसोईगृह में परिवर्तित हो चुकी थी। आश्रम का पूर्व रसोईगृह घास-गोमय से भरी एक गोशाला थी। यही श्री स्वामी जी का निवास स्थान एवं ऑफिस भी था। यह डिवाइन लाइफ सोसायटी की स्थापना की कहानी है।

इससे पूर्व उनके पास कोई सम्पत्ति नहीं थी। दान में एक रुपया आता था। जब स्वामी शिवानन्द जी महाराज स्वर्गाश्रम कुटीर में रहते थे, उनकी महानता से प्रभावित नागपुर का एक शिक्षक उन्हें दानस्वरूप एक रुपया भेजा करता था। उन दिनों एक रुपये का बहुत अधिक मूल्य था। श्री स्वामी जी उस रुपये से दही खरीदते थे तथा आँव-पेचिश आदि रोगों से पीड़ित निर्धन साधुओं को देते थे। वे उनकी हर प्रकार से सहायता करते थे। नि:सहाय साधुओं को चिकित्सकीय सहायता प्रदान करने हेतु उन्होंने लक्ष्मणझूला में सत्य सेवाश्रम डिस्पेन्सरी प्रारम्भ की। डिवाइन लाइफ सोसायटी का इतिहास अत्यधिक विस्तृत है, इसका सम्पूर्ण वर्णन कठिन है। कुछ बातों से मैं अवगत हूँ तथा कुछ मेरे यहाँ आने से पूर्व घटित हुईं।

यह भगवान् के सौन्दर्य तथा स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चमत्कार की अद्भुत अभिव्यक्ति की दीर्घ सृजनात्मक प्रक्रिया है। गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज की तपस्या के कारण यहाँ समस्त कार्य सुन्दर रूप में सम्पन्न हो रहे हैं। यदि आज यहाँ उनकी तपस्या कार्यशील नहीं होती, तो डिवाइन लाइफ सोसायटी का अस्तित्व नहीं रहता। हम उन महान् गुरु के हाथ एवं पैर हैं, हमारी शक्ति के स्रोत वे ही हैं। हम भगवान् में पूर्ण विश्वास रखते हैं। मैं आपको सच्चाईपूर्वक बता रहा हूँ कि हम केवल भगवान् में विश्वास रखते हैं, संसार की किसी अन्य वस्तु-व्यक्ति में विश्वास नहीं रखते हैं। अत: सफलता निश्चयमेव प्राप्त होगी।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

पूर्व–अंक से आगे :

मैं इसका उत्तर दूँ?

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

२२५

भगवान् चेतन हैं अथवा जड़? यदि वह चेतन हैं तो निश्चित रूप से उनका कोई रूप भी होना चाहिए, क्योंकि चेतना तो केवल उसी में हो सकती है जिसका कोई रूप–आकार हो।

भगवान् शुद्ध चैतन्य हैं। वह सर्वज्ञ हैं, सब–कुछ जानते हैं। वह निराकार अथवा अमूर्त हैं। इस भौतिक शरीर ने हमारी परम चेतना को सीमाबद्ध कर दिया है। चेतना विभिन्न प्रकार की होती है, यथा—भौतिक अथवा शारीरिक चेतना, मानसिक चेतना और परम चेतना। परमचैतन्य की अनुभूति आपको तब होगी जब सतत एवं गहन ध्यान के द्वारा आप तीनों शरीरों से अतीत पहुँच जायेंगे। इस सीमित देह और सीमित इन्द्रियों से तो आप केवल भौतिक अथवा शारीरिक चेतना को ही अनुभव कर सकते हैं।

२२६

यदि मैं कहता रहूँ कि 'मैं राजा हूँ, मैं राजा हूँ' तो मैं राजा नहीं बन सकता, इसी प्रकार यदि मैं 'अहं ब्रह्मास्मि' का जप करता रहूँ तो मैं ब्रह्म नहीं बन सकता।

'मैं राजा हूँ' कहने के साथ–साथ आपको स्वयं को तैयार भी करना पड़ेगा। आपको भारी संख्या में लोग एकत्रित करने होंगे। और भी बहुत–कुछ आपको सीखना पड़ेगा। युद्ध करना पड़ेगा। इसके लिए भी इसी प्रकार आपको तैयारी करनी होगी और मन को शुद्ध करना होगा। मोक्ष–प्राप्ति के चारों साधनों, यथा—विवेक (नित्य–अनित्य के भेद को समझने का ज्ञान), वैराग्य (आसक्ति का न होना), षड्सम्पद (षड्गुणों का अर्जन) और मुमुक्षुत्व (मुक्त होने की तीव्र आकांक्षा) को अर्जित करना होगा। इसके उपरान्त श्रवण (श्रुतियों को सुनना), मनन (सुने–पढ़े हुए पर गहन विचार) और निदिध्यासन (सतत एवं गहन ध्यान) करना पड़ेगा। केवल तब ही आप आत्म–साक्षात्कार अथवा ब्रह्मानुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

२२७

यदि मैं 'शर्करा, शर्करा' कहता रहूँ तो मुझे शर्करा प्राप्त नहीं हो सकती। तब क्या यदि मैं 'राम, राम' कहता रहूँ तो क्या राम प्राप्त हो सकते हैं?

शर्करा क्रय करने के लिए पहले तो आपको धन चाहिए, फिर लेने के लिए बाज़ार जाना पड़ेगा। इसी प्रकार इसके लिए भी आपको काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष, मद एवं मात्सर्य का त्याग करना होगा; फिर भाव एवं निष्ठा–पूर्वक एकाग्रता के साथ 'राम, राम' जप करना होगा। तब आपको भगवान् श्री राम के दर्शन अवश्य प्राप्त हो जायेंगे। किन्तु राम तो आपके भीतर हैं। शर्करा बाहर है। आपको अपना हृदय पूर्ण रूप से श्री राम को समर्पित करना पड़ेगा।

२२८

समाधि में अति शीघ्र कैसे प्रवेश किया जा सकता है?

यदि आप अति शीघ्र समाधि में प्रवेश करना चाहते हैं तो अपने मित्रों, सम्बन्धियों आदि के साथ समस्त सम्बन्धों

का विच्छेदन कर डालें। किसी को भी पत्र न लिखें। एक मास के लिए पूर्ण मौन धारण कर लें। एकान्त में निवास करें। अकेले भ्रमण करें। अत्यन्त अल्प किन्तु पुष्टिवर्धक आहार लें, यदि रह सकते हों तो केवल दूध पी कर निर्वाह करें। गहन समाधि में उतर जायें। और भी अधिक गहन गोता लगायें। निरन्तर अभ्यास करते रहें। आप समाधि में लीन हो जायेंगे। अपनी सामान्य बुद्धि का उपयोग करें। मन के साथ बल-प्रयोग न करें। शान्त रहें। दिव्य विचार-तरंगों को शान्तिपूर्वक प्रवाहित होने दें।

२२९

बुराई के होने की आवश्यकता ही क्या है?

यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका अभी तक सन्तों, ऋषियों, आचार्यों और दार्शनिकों ने भी उत्तर नहीं दिया है। आप अभी यह प्रश्न न करें। अपने विकास के जिस स्तर पर अभी आप हैं, उस पर अभी आप इसे नहीं समझ पायेंगे। यह अवर्णनीय है, अबोधगम्य है, अनिर्वचनीय माया है। केवल ब्रह्म अथवा भगवान् ही इसे जानते हैं। आप इसे केवल तभी समझ सकेंगे जब माया से मुक्ति पा लेंगे, जब आपको ब्रह्म का बोध अथवा ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जायेगा। यह प्रश्न एक अन्य ढंग से भी किया जाता रहा है। भगवान् ने इस सृष्टि की क्यों रचना की? इस विश्व के, क्यों और कैसे के सम्बन्ध में कोई नहीं जानता। आप भी अब इस विषय पर माथापच्ची न करें। अभी आपको इसका उत्तर नहीं मिलेगा, केवल अपना समय और शक्ति ही नष्ट करेंगे। आप अभी केवल बुराई से परे जाने का प्रयास करें। इसके मार्ग हैं, उन्हें जानें और प्रयत्न करें।

२३०

इच्छाओं से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है?

विवेक-शक्ति को विकसित करें। ब्रह्म सत्य है। जगत् मिथ्या है। ब्रह्म में कोई इच्छा नहीं है। इच्छा मन में है। विचार करें। समस्त इच्छाएँ शून्य में लीन हो जायेंगी। वस्तु-पदार्थों में दोष-दृष्टि से विचार करें। विषय-वस्तुएँ असत् हैं, जड़ एवं दुःख का कारण और अशुद्ध हैं। ज्वलन्त मुमुक्षुत्व को विकसित करें। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने की तीव्र इच्छा अन्य समस्त सांसारिक इच्छाओं को नष्ट कर देगी। अपनी इन्द्रियों को भी नियन्त्रण में रखें। वैराग्य को बढ़ायें। भोग-पदार्थों को छोड़ दें। यह त्याग है। इससे समस्त इच्छाएँ समाप्त हो जायेंगी।

२३१

यदि हम भगवान् के हाथों का उपकरण मात्र हैं, तो क्या मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है?

मनुष्य केवल तभी स्वतन्त्र होता है जब उसकी व्यक्तिगत इच्छा भगवान् की इच्छा में लीन हो जाती है। स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता को आध्यात्मिक स्वतन्त्रता समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। भगवान् के हाथों का निमित्त अथवा उपकरण बनने से भक्त अपने अहंकार अथवा अपनी 'तुच्छ मैं' को नष्ट कर देता है, किन्तु उसे समस्त दिव्य ऐश्वर्य अथवा भगवान् की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। वह पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है। अब वह भगवान् के साथ एक हो गया होता है।

२३२

मैं स्वयं को ध्यानपरायण जीवन जीने के लिए किस प्रकार तैयार करूँ?

अपनी धन-सम्पत्ति अपने तीनों पुत्रों में बाँट दें। जीवन-निर्वाह के लिए थोड़ा-सा अपने पास रख लें। कुछ अंश दान कर दें। ऋषिकेश में एक कुटीर बना लें और वहाँ रहें। अपने पुत्रों को पत्र न लिखें। मैदानी क्षेत्र में न जायें। इसके उपरान्त ध्यान आरम्भ करें। अब आपका मन शान्त हो जायेगा। यह सब-कुछ तत्काल आरम्भ कर दें। शीघ्रता करना अति आवश्यक है।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आपका शान्ति-दूत :

प्रत्येक परिस्थिति में चट्टान की तरह अडिग रहना

(परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

अपनी प्रसन्नता का निर्माण आप स्वयं कर सकते हैं

हम दुःख और दर्द नहीं चाहते, हम सुख और प्रसन्नता को चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है और इसी की खोज में रहता है। अपने सभी अनुभवों की रचना करने वाले आप स्वयं हैं—अपनी प्रसन्नता का निर्माण आप स्वयं कर सकते हैं और अपने कष्टों का अन्त भी आप स्वयं ही कर सकते हैं। यह सत्य है, कृपया इस पर बार-बार विचार करें। यदि आप इस संसार की किसी भी घटना-परिस्थिति से, स्वयं को प्रभावित करने को अस्वीकार कर देते हैं तो आप यह सुनिश्चित कर लेते हैं कि आपके साथ क्या होगा और क्या नहीं होगा। यही वह निर्णय है जो आपको दुःख अथवा सुख का कारण बनने में अन्तर उत्पन्न कर सकता है, अथवा यह कहें कि आपको प्रत्येक परिस्थिति में चट्टान की तरह अडिग रहने में सक्षम बना सकता है। तथापि, इस तत्क्षण किये गये निर्णय की पृष्ठभूमि का आधार इस तथ्य में निहित है कि आपने स्वयं को कैसे प्रशिक्षित किया है, कि आपने अपने जीवन से क्या सीखा है और आपने उस शिक्षा के आधार पर स्वयं को कितना विकसित किया है। जिस व्यक्ति की पृष्ठभूमि विवेक, विचार और विश्लेषण से पूर्ण है, उसको हिला सकने की क्षमता इस संसार में नहीं है।

और यदि यह पृष्ठभूमि नहीं है, तो यह समझ लें कि बाह्य जगत् में जो-कुछ भी है और हो रहा है, आप उसके हाथों में खेल रहे हैं। तब तो हर वस्तु-परिस्थिति में यह शक्ति है कि वह आपको हँसाये या फिर रुला दे। बाह्य वस्तुओं को यह क्षमता दे देना कि वह आपके आन्तरिक जीवन को प्रभावित करें, बुद्धिमत्ता नहीं है। अपने भीतर की अवस्था के मालिक तो आपको स्वयं होना चाहिए और इसके लिए आपको अपने-आपको विकसित करना होगा। आपको विवेक और गहन चिन्तन को बनाये रखना होगा और फिर इसके साथ-साथ अन्य लोगों के जीवन से भी शिक्षा ग्रहण करनी होगी। यह आने-जाने वाली घटनाएँ और परिस्थितियाँ तो अनिवार्य हैं—यह सभी हमारे जीवन के साथ चलती रहती हैं, जीवन का एक अंग हैं यह। जिनको हम टाल नहीं सकते, उनके लिए चिल्लाने का कोई लाभ नहीं है।

हमारे महान् सन्तों ने इस प्रार्थना के मर्म को समझा था, 'जिसमें परिवर्तन लाया जा सकता हो, उसे परिवर्तित करने का मुझे साहस प्रदान करें, जो परिवर्तित न किया जा सकता हो, उसे शान्तिपूर्वक मान लेने की मुझे सामर्थ्य दें और इन दोनों में अन्तर जान सकूँ, ऐसा विवेक मुझे प्रदान करें।' इस प्रकार उन्होंने अपरिहार्य वस्तु-स्थिति को पहचाना और उसे मान लिया। उन्होंने कहा, 'यह ऐसे ही होता है, इसलिए मुझे इसे मान लेना चाहिए और मुझे इसके साथ सही रूप में सामंजस्य स्थापित करना सीखना चाहिए।' हमारे सुख-दुःख, हर्ष-शोक वास्तव में पिच्चानवे प्रतिशत इस तथ्य पर निर्भर करते हैं कि हम स्वयं को कितना भलीभाँति जानते हैं और अपने आन्तरिक जीवन से कितनी भलीभाँति स्वयं को जोड़ते हैं।

अपने अनुभवों के साथ स्वयं अपने-आपका विवेक-पूर्वक सम्बन्ध स्थापित करने के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। अभी कुछ ही समय पहले की बात है कि हृदय से सम्बन्धित रोग से ग्रस्त एक शिशु था जिसे वायुयान से एक

विशेष चिकित्सालय में भेजा गया था और यह घटना समाचारपत्रों में भी प्रकाशित होने से बहुचर्चित भी रही थी। वे उस बच्चे को बचाने का प्रयास भी बहुत करते रहे, किन्तु अन्ततः उसकी मृत्यु हो गयी। निःसन्देह माता-पिता के लिए यह असहनीय दुःखद घटना थी। ऐसी घटनाएँ प्रकट रूप में तो मात्र बाह्य घटना लगती हैं, किन्तु दर्शन शास्त्र चाहता है कि आप इन्हें केवल बाह्य घटना के रूप में न देखें, अपितु इनका आन्तरिक अर्थ भी समझें। कितने ही शिशु इस तरह के रोगों के साथ जन्म लेते हैं और फिर इसी प्रकार उनकी मृत्यु भी हो जाती है—आपके अपने ही पड़ोस के परिवार में ही हो सकता है कि ऐसी घटना हुई हो। किन्तु जब तक व्यक्तिगत रूप से आप उससे किसी प्रकार से सम्बन्धित नहीं हैं, तब तक आपको उससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। किसी अन्य के साथ होने वाली दुःखद घटना आपको भयावह शोक-सागर में नहीं डुबाती और आप अपना सामान्य जीवन जीते रहते हैं, यद्यपि वह दुःखद घटना तो हुई ही होती है।

लोग कैंसर जैसे रोगों से पीड़ित हैं, अन्य अनेकों भयंकर रोगों से ग्रस्त बालकों से चिकित्सालय भरे पड़े हैं और हर दिन मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं तथापि हम उसी तरह से सामान्य जीवन जीते रहते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। किन्तु जब ऐसा ही कुछ आपके परिवार के साथ अथवा स्वयं आप ही के साथ घट जाता है तब आप दुःख-क्लेश से भर जाते हैं। तब यह कष्ट-व्यथा ऐसी नहीं होती जब कोई अन्य मनुष्य कष्ट से ग्रसित हो अथवा किसी बालक की मृत्यु हो गयी हो। असह्य पीड़ाप्रद तब बन जाता है जब यह आपकी अपनी सन्तान अथवा आपके अपने निकटतम सम्बन्धी के साथ घट जाता है। तब ऐसा कष्ट इसलिए होता है कि आपके मन ने उसके साथ एक विशेष सम्बन्ध जोड़ लिया होता है और वह उस घटना को एक विशेष ढंग से देखने लगता है। अन्ततोगत्वा आपका मन जिस व्यक्ति अथवा जिस घटना से अपना सम्बन्ध जैसा भी जोड़ लेता है, आप भी वैसे ही अनुभव करने लगते हैं।

एक अन्य उदाहरण यह ले सकते हैं कि मान लें कि आप बस की प्रतीक्षा में स्टाप पर खड़े हों और एक दमकल तीव्र गति से आपके निकट से निकल जाये तो आपको इससे कोई व्याकुलता नहीं होती क्योंकि आप जानते हैं कि आपके घर में आग लगने की कोई सम्भावना नहीं है; किन्तु हाँ, यदि कोई यह बताता है कि आग उसी क्षेत्र में लगी है जहाँ आप रहते हैं तो उस क्षण आपको व्याकुलता घेर लेती है, 'हे भगवान्, कहीं हमारे घर में तो नहीं!' और यदि यह सचमुच आपके ही घर में हो, तब तो आपकी व्याकुलता एवं भय का पारावार नहीं रहता। इसी प्रकार यदि किसी बैंक को घाटा पड़ जाये और वह दिवालिया हो जाये और आपकी जमा-पूँजी उसमें न हो, तो आप चिन्तित नहीं होते, तब आप अत्यन्त सरलता से इसे भुला देंगे और आराम से अपनी काफ़ी का प्याला पीते रहेंगे। किन्तु यदि यह घटना उस बैंक के साथ घटी हो जिसमें आपकी समस्त जमा पूँजी हो, तब निश्चित रूप से आप अत्यन्त व्याकुल होंगे। यही मेरापन है अथवा किसी वस्तु-विशेष के प्रति मन के लगाव की विशिष्ट स्थिति का होना है।

क्या आपने इस पर कभी विचार भी किया है? आपको कुछ नकारात्मक अथवा सकारात्मक अनुभव हुए—यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नहीं अपितु आप उनसे स्वयं को कैसे जोड़ते हैं, यह सबसे अधिक महत्त्व रखता है। अन्ततोगत्वा आपका अनुभव दो बातों के कारण है : एक तो उस विषय, परिस्थिति अथवा व्यक्ति से अपने मन को जोड़ने का विशेष ढंग और दूसरा, जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि यह इस पर भी निर्भर करता है कि आपने उन घटनाओं को ग्रहण करने के लिए अपने मन को कैसा प्रशिक्षित किया है। यदि मन उन्हें नकारात्मक रूप से ग्रहण करता है, तो प्रत्येक अनुभव में आपको असन्तुलित कर देने की शक्ति है। यदि मन उन्हें सकारात्मक और रचनात्मक रूप से ग्रहण करता है, तो आप जीवन को अप्रभावित और प्रशान्त ढंग से व्यतीत कर लेते हैं। तब आपने स्वयं को इस प्रकार अनुशासित कर लिया होता है कि आपका व्यक्तित्व एक समग्र एवं सशक्त व्यक्तित्व बन गया होता है। और यदि आप एक सुदृढ़ केन्द्र में अवस्थित हो चुके होते हैं तो आप जीवन के अनिवार्य उतार-चढ़ावों को शान्तिपूर्वक वहन कर सकते हैं। *(क्रमशः)*

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आध्यात्मिकता का सत्य-स्वरूप :

इच्छाओं का प्रबन्धन

(परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

अत:, यह आवश्यक है कि हम दूर ठण्ढे स्थानों पर जा कर, बर्फ़ीले पानी में स्नान कर तथा मनुष्यों से दूर रह कर भगवान् अथवा योग-प्रणाली के साथ परिहास न करें। यह वर्षों पर्यन्त चलेगा, परन्तु यह कहानी पूर्ण नहीं हैं। इसमें कुछ अन्य तथ्य भी हैं।

प्रसुप्तावस्था इच्छा की सुप्तावस्था है। अपने जीवन में प्रकट जटिलताओं के सिवाय हम यह नहीं जान सकते कि इच्छाएँ सुप्त हैं तथा एक अच्छे मनोवैज्ञानिक हुए बिना हम यह नहीं जान सकते कि ये जटिलताएँ क्या हैं, क्योंकि वे हमें सामान्य व्यवहार जैसी प्रतीत होती हैं। सांसारिक दृष्टि में एक चालाक द्रष्टा को अथवा एक सामान्य व्यक्ति को यह व्यवहार अस्वाभाविक लगेगा, परन्तु स्वयं को यह व्यवहार स्वस्थ प्रतीत होगा। ऐसे व्यक्ति, जिन्होंने लम्बे समय से अपनी इच्छाओं को बलपूर्वक दबाया हुआ है, उनमें चिड़चिड़ापन पाया जाता है। वे अकस्मात् छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं तथा अजीब शक्ल बना कर ऐसी प्रतिक्रिया करते हैं जैसी कि एक सांसारिक व्यक्ति भी नहीं करेगा।

कभी-कभी इच्छाएँ दुर्बल हो जाती हैं, वे सुप्त अवस्था में नहीं होतीं, वे जाग्रत होती हैं, परन्तु पतले सिल्क धागे की भाँति क्षीण होती हैं—उदाहरण के लिए, जब हम गंगोत्री से ऋषिकेश की ओर आते हैं, तो आश्रम में रहते हैं। तब धीरे-धीरे इच्छा जाग्रत होती है—''अरे! मैं ऋषिकेश आ गया हूँ। यहाँ का वातावरण गंगोत्री की अपेक्षा अधिक अनुकूल है, परन्तु मेरी इच्छाएँ फलीभूत नहीं हो सकतीं क्योंकि मैं एक आश्रम में हूँ। इच्छाएँ दुर्बल हुए सर्प की भाँति हैं जिन्हें दिवस-पर्यन्त भूखा रखा गया है तथा वे क्रमशः अपने बिल से बाहर निकल कर पूर्णता प्राप्त करने का अवसर ढूँढ़ती हैं। परन्तु वे निवास-स्थान के बन्धनों के कारण ऐसा करने में असमर्थ होती हैं। उदाहरण-स्वरूप, जब हम स्वेच्छापूर्वक एकादशी व्रत-पालन करते हैं, तो भोजन ग्रहण करने की इच्छा दुर्बल होती है। यह पूर्णतया समाप्त नहीं होती, क्योंकि हमें सन्तुष्टि होती है कि कल हम अच्छा भोजन ग्रहण करेंगे। वह सन्तोष ही आज के व्रत की पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करता है; नहीं तो, यदि हमें दस दिन तक भोजन न मिलने का आभास हो, तो यह भयावह होगा। इस मन को समझना अत्यन्त कठिन है।

आपके पास इस समय भले ही धनराशि न हो, परन्तु आपको यह सन्तोष होता है कि बैंक में आपके पास पर्याप्त धन है। यह हजारों मील दूर किसी बैंक में हो सकता है, परन्तु हाथ में धन न होने पर भी वह भावना आपको एक स्वस्थ आभास दे सकती है। दूसरी ओर, यदि मैं आपकी गोद में लाखों सरकारी डॉलर डाल दूँ, तब भी आप प्रसन्न नहीं हो पायेंगे, क्योंकि वह वास्तव में आपके नहीं हैं तथा आप उनका उपयोग नहीं कर सकते। आप बैंक में कैशियर भी हों, तो भी क्या लाभ? धन गिनते रहना, गिनते रहना कोई प्रयोजन नहीं! यह आपका नहीं है। लाखों रुपये अथवा डॉलर छू कर भी आप स्वयं को ही कोसेंगे। दूसरी ओर, आप हाथ में कुछ न हो कर भी प्रसन्न हैं, भले ही वह कोसों दूर क्यों न हो, मात्र इसीलिए कि वह आपका है। मन का स्वभाव सूक्ष्म है। ***(क्रमशः)***

(भाषान्तर : मेधा सचदेव)

मानव से ईश-मानव :

स्वामी शिवानन्द और पश्चिमी जगत्

(श्री एन. अनन्तनारायणन्)

(पूर्व-अंक से आगे)

घृणा एवं हत्या के छह वर्षों ने अनेकों यूरोपवासियों के हृदयों में पूर्णतया आदर्श-स्थान को खोजने की तीव्र इच्छा उत्पन्न कर दी थी। उन्होंने जान लिया था कि उनकी अपनी संस्कृति में मानव के अन्तर्मन को सन्तुष्ट कर सकने की क्षमता नहीं है। उन्होंने यह समझ लिया कि उन्हें जैट विमानों की चीत्कारों तथा राजनेताओं के खोखले कथनों के स्थान पर किसी अन्य उत्तम वस्तु की आवश्यकता है।

स्वामी शिवानन्द जी यद्यपि युद्धभूमि से सहस्रों मील की दूरी पर थे, किन्तु अपने यूरोपीय भक्तों को उन्होंने ऐसे लिखा मानो वे पूरा जीवन उनके मध्य में ही रहे हों। अपने शब्दों में वे अपना सम्पूर्ण हृदय उँड़ेल देते थे, और उनके पत्र पढ़ कर उनके भक्तों को ज्ञात हो जाता था कि उनसे एक ऐसा व्यक्ति बात कर रहा है जिसके लिए देश-काल की सीमाओं का किंचित् भी अस्तित्व नहीं है। ऐसे ही जर्मनी के डा. ओस्कर सी. फ़ौस को सम्बोधित एक पत्र में स्वामी जी ने लिखा :

''यूरोप को आज जिन कमियों और नृशंसताओं का दोषी कहा गया है, उसका प्रभाव इन समस्त देशों के भाग्य में सदा के लिए लिखा रहेगा। यह कतिपय आन्दोलनों अथवा संस्थाओं द्वारा ठीक होने वाला नहीं है। कोई घोषणा पत्र, कोई भी संविधान एक ही दिन में संसार में पूर्ण समरसता, शान्ति एवं सम्पन्नता नहीं ला सकता। विश्व की मुक्ति, व्यक्ति की मुक्ति पर निर्भर करती है। व्यक्तिगत परिपूर्णता द्वारा विश्व में परिपूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

''केवल ईसा, बुद्ध और विवेकानन्द की सन्ततियाँ ही विश्व-परिपूर्णता का स्वप्न साकार कर सकती हैं। और अति मानवों द्वारा लाये जाने वाले इस प्रकार के परिपूर्ण संसार की सम्भवता, निश्चित रूप से है, और वर्तमान समय की यह यातनाओं भरी निर्मम परिस्थितियाँ, भविष्य के उषाकालीन प्रात: के पूर्व का गहन अन्धकार मात्र हैं। इस पीढ़ी के प्रयासों की व्यर्थता, उनकी उपलब्धियों के खोखलेपन, उनकी सम्पन्नताओं की सीमितता तथा उनकी प्रसन्नताओं के पीछे निहित दु:खों को समझने के लिए उन्हें इस प्रशिक्षण में से निकलना अनिवार्य था।

''इतिहास के ऐसे कष्टप्रद समय में से निकालने में, उस परम कृपालु भगवान् का केवल एक अति दयापूर्ण प्रकटीकरण ही है। यदि उनके द्वारा हमें कष्ट दे कर रुलाया जाता है तो यह केवल इसलिए कि हमारी पशुता का अन्त अधिक सरलता और अधिक शीघ्रता से केवल ऐसी कष्टपूर्ण शल्यक्रिया से ही सम्भव है।

''कभी भी निराश न हों। निराश तो केवल तभी हों, जब विश्वास का प्रकाश समाप्त हो जाने की आशंका हो। विश्वास सहित, धैर्य एवं आध्यात्मिक दृढ़तापूर्वक सतत अभ्यास के द्वारा अपने हृदय में से समस्त दुर्बलताओं एवं लालसाओं को मिटा डालें।''

यूरोप के भक्त इस शाश्वत ज्ञान से, निर्देश देने की इस शुभेच्छा से, मैत्रीपूर्ण भावना से एवं सहायता करने की इस सद्भावना से अत्यन्त प्रभावित हुए। उनमें बहुत से तो गुरुदेव

के प्रति इतना अधिक आकर्षित हो गये कि उनके दर्शनों के लिए ऋषिकेश आश्रम तक आये।

यदि यूरोप में महायुद्ध के भीषण कष्टों ने लोगों को शाश्वत मूल्यों की खोज के विषय में चिन्तन करने की प्रेरणा दी तो अमरीका में विनाशकारी भौतिकवाद एवं इसके सहगामी दुष्परिणामों ने वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक व्याकुलता से भर दिया था। विचारशील अमरीकियों को अपना देश लोभ-लालसाओं की अग्नि से झुलसती हुई मरुभूमि प्रतीत होने लगा था। वह इस भय से आशंकित थे कि समय के साथ उनके देश को भी रोम की भाँति इसकी सम्पदा ही इसे विनाश के गर्त में धकेल देगी।

अमरीका दिशाहीन हो गया प्रतीत होता था। यहाँ के अनेक देशवासी, दैहिक भोग-विलास एवं सुख-वैभव के साधनों के व्यापारीकरण में निहित आध्यात्मिक विनाश के भय के प्रति जागरूक होने आरम्भ हो गये। चलचित्रों, टीवी और रेडियो के माध्यम से किये जाने वाले अमानवीय भ्रष्ट प्रचार से वे लोग ऊबने लगे। भौतिकता की उपासना और आध्यात्मिकता की उपेक्षा से पूर्ण अमरीकी जगत् में नैतिकतापूर्ण जीवन के विचारों को स्थान देना तक भी कठिन हो चला था। वहाँ की दु:खद परिस्थिति का चित्रांकन, ब्रिटिश कोलम्बिया के एक कैनेडावासी श्री माइकल जौ टैकौन ने 'डिवाइन लाइफ' अंक में बहुत सुन्दर रूप में किया था :

''यहाँ उत्तरी अमरीका में, और साधारणतया तो पूरे पश्चिमी जगत् में ही, आध्यात्मिक जागरूकता चिरकालिक अनिवार्यता बन गयी है...क्योंकि अधिकांश लोग इस कहावत के अनुसार चलने वाले हैं—'जैसा देश वैसा वेष' और वेष प्राय: ऐसा है जैसा नहीं होना चाहिए। अर्थात् जैसा सब कर रहे हैं, वैसा ही करना उचित समझते हैं, जो कि वस्तुत: अनुचित है। इस प्रकार नाम मात्र लोग ही उच्चतर आध्यात्मिक साधना को अपनाते हैं और बहुत अधिक संख्या में तो लोग अपने धर्म का अपनी सुविधानुसार उपयोग करके अति सामान्य अवस्था में ही लटक रहे हैं।''

ऐसी निराशाजनक परिस्थितियों में बहुत से अमरीकावासी आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करने के लिए गुरुदेव से पत्र-व्यवहार करने लगे। कई लोगों ने गुरुदेव को अपने देश में आने का निमन्त्रण दिया।

गुरुदेव के शिष्यों ने भी स्वामी जी के लिए विश्व-भ्रमण का कार्यक्रम बनाया था जो १९५० की भारत-सिलोन की अत्यन्त सफल यात्रा के तुरन्त बाद का समय था। स्वामी जी के विभिन्न देशों में रहने वाले अनुयायी इस कार्यक्रम को ले कर अत्यधिक उत्साह में भर हुए थे। स्वामी जी के आगमन के स्वागतार्थ उन्होंने गुरुदेव की अनेक रचनाओं का अपनी भाषाओं में अनुवाद करके प्रकाशन किया था। किन्तु समय आने से कुछ ही पहले, स्वामी जी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण यात्रा का विचार त्याग देना पड़ा। किन्तु इस प्रकार यद्यपि गुरुदेव तो नहीं जा पाये फिर भी उनके सन्देश समस्त विश्व में पहुँच गये। उनकी पुस्तकों के पाठकों ने उनके साथ पत्र-व्यवहार प्रारम्भ कर दिया और उनमें से कई बाद में आश्रम भी आये।

इन विदेशी दर्शनार्थियों में कई अपने साथ सिने एवं टीवी कैमरे भी ले कर आये थे। उन्होंने आश्रम की दिनचर्या के चलचित्र बनाये और फिर वापिस लौटने पर अपने देशों में लोगों को पर्दे पर दिखाये। इनमें सबसे प्रथम थेडोर वौन रैडलो थे जिनकी फिल्में कैनेडा के टीवी नेटवर्क पर प्रदर्शित की गयीं। इसी प्रकार ३ जुलाई १९५९ को स्वामी जी फ्रांस, बेल्जियम और स्विट्ज़रलैंड के टैली-स्क्रीनों पर दिखाये गये और वहाँ के लगभग ३० लाख लोगों ने 'टेलीविजन फ्रैंसाइज़' के प्रतिनिधि के द्वारा 'दी योगी एण्ड दी बिल्डर' शीर्षक से प्रदर्शित की जाने वाली इस फ़िल्म को देखा। इसमें शिवानन्द आश्रम की कई दैनिक गतिविधियों को भी प्रदर्शित किया गया था।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

♦ ♦ ♦

शिवानन्द-ज्ञानकोष :

शिष्य

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

जो भी शिष्य गुरु के प्रति निष्ठावान्, निष्कपट एवं विनम्र रहेगा, उसी पर गुरु-कृपा का वर्षण होता जायेगा। गुरु में अखण्ड विश्वास रखना ही श्रद्धा कहलाता है। गुरु-वचनों में दृढ़ विश्वास रखना तथा उन्हें सत्य मानना श्रद्धा का ही फल है। ऐसी श्रद्धा में किसी और साक्षी की आवश्यकता ही नहीं रहती। श्रद्धालु शिष्य न तो तर्क-वितर्क करता है, न ही टीका-टिप्पणी, न ही सोच-विचार। वह तो सरलता से, निष्कपटता से गुरु-आज्ञा का पालन करता है। जो आज्ञा-पालन करता है, वही सच्चा शिष्य है।

शिष्य की शरणागति और गुरु-अनुग्रह का पारस्परिक सम्बन्ध रहता है। शरणागति से ही गुरु-कृपा प्राप्त होती है और यह गुरु-अनुकम्पा ही शरणागति में पूर्णता लाती है।

गुरु-कृपा शिष्य की साधना के रूप में क्रियाशील रहती है। यदि शिष्य साधना में स्थिर रह पाता है तो इसमें गुरु-कृपा ही माननी चाहिए। यदि शिष्य प्रलोभनों का विरोध कर पाता है तो यह गुरु-कृपा ही है। यदि उसे लोगों द्वारा आदर तथा सत्कार प्राप्त होता है, तो गुरु-कृपा ही से। यदि उसकी सभी शारीरिक भौतिक आवश्यकताएँ पूरी होती हैं; निराशा तथा उदासी में भी उसे उत्साह, आशा तथा शक्ति प्राप्त होती है तो इसे गुरु-कृपा ही मानिए। गुरु-अनुग्रह से ही शिष्य शारीरिक चेतना, देह-भान से ऊपर उठ कर अपने आनन्द स्वरूप में स्थित हो पाता है। पग-पग पर गुरु-कृपा के दर्शन करिए, अनुभव करिए और गुरु के प्रति सत्यनिष्ठ, निष्कपट तथा निष्ठावान् रहिए।

गुरु-शिक्षा का स्वरूप

गुरु अपने व्यक्तिगत आचरण से शिष्य को शिक्षित करते हैं। शिष्य के लिए गुरु की नित्य-चर्या, जीवन-चर्या एवं आचरण एक मूर्तिमान् ज्वलन्त आदर्श होता है। निष्ठावान् शिष्य के लिए गुरु का जीवन एक जीवन्त धर्मोपदेश है। सतत सान्निध्य द्वारा वह गुरु के गुणों एवं विशिष्टताओं को अपने मन में धारण कर लेता है। वह शनैः-शनैः उसी साँचे में ढल जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् का स्वाध्याय कीजिए। आपको पता चल जायेगा कि इन्द्र अपने गुरु प्रजापति के पास एक सौ एक वर्ष तक रहे और उनकी सेवा दत्तचित्त हो कर की।

शिष्य की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को केवल गुरु ही जानता है। वह शिष्य के स्वभाव तथा उसकी क्रमिक प्रगति के अनुसार उपदेश करता है। इस उपदेश को गुप्त रखना चाहिए। शिष्यों में उपदेश सम्बन्धी पारस्परिक अनर्गल वार्तालाप अथवा चर्चा गुरु की आलोचना का रूप ले कर साधना में विघ्न लाता है। इससे साधना में किसी प्रकार की प्रगति नहीं हो सकेगी। गुरु के आदेश का अक्षरशः पालन करिए। याद रखिए, यह केवल आपके लिए है। अन्य शिष्यों को भी गुरु-उपदेश मिल चुका है। उनको गुरु-उपदेशों का पालन करने दीजिए। अपने गुरु-गृहीत उपदेश को उन पर मत थोपिए।

शिष्य अपने श्रद्धा-विश्वास एवं निष्ठा की मात्रानुसार ही गुरु के उपदेशों को मन में धारण कर पाता है। जब गुरु अपने शिष्य को आध्यात्मिक उपदेश देते हैं, उस समय यदि वह उनके उपदेशों की ओर ध्यान नहीं देता और अपने को योग्यतम मान कर असावधानी बरतता है तथा अपने हृदय के कपाट बन्द रखता है तो वह कदापि लाभान्वित नहीं हो सकता। ***(क्रमशः)***

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

नामदेव

ज्योति-सन्तानो!

नमस्कार! ॐ नमो नारायणाय!

नामदेव महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध सन्त थे। उनका जन्म पण्ढरपुर के विट्ठल के अनन्य भक्त दर्जियों के परिवार में १२६९ ई. में हुआ था। दो वर्ष की आयु में ही उन्होंने जिस शब्द का निर्भ्रान्त उच्चारण किया, वह था 'विट्ठल'।

उनकी माता गुनाबाई उन्हें प्रतिदिन अपने इष्टदेव विठोबा के मन्दिर में अर्चन-पूजन के लिए ले जाया करती थीं, इसमें नामदेव को बहुत आनन्द आता था। एक दिन उनकी माता ने उनसे पूजन-सामग्री ले कर विठोबा के मन्दिर में जाने को कहा। मन्दिर में नामदेव ने पूजन की खाद्य-सामग्री को विठोबा के समक्ष रख कर उनसे उसे ग्रहण करने का आग्रह किया; किन्तु विठोबा की ओर से जब उनके आग्रह की स्वीकृति का कोई संकेत नहीं मिला, तब वह फूट-फूट कर रोने लगे जिसके परिणाम-स्वरूप विठोबा ने मनुष्य-स्वरूप धारण कर उस खाद्य-सामग्री को कृतज्ञ भाव से ग्रहण कर लिया। हाथ में रिक्त पात्र लिये हर्ष-विह्वल नामदेव ने जब अपनी माता को बताया कि विठोबा ने मानव-शरीर धारण कर खाद्य-सामग्री को उदरस्थ कर लिया था, तब वह आश्चर्यचकित रह गयी। दूसरे दिन वह छिप कर नामदेव के पीछे-पीछे चल पड़ीं। विठोबा को खाद्य-सामग्री को साक्षात् ग्रहण करते देख वह सन्तुष्ट हो गयीं और नामदेव के लिए उनका मन असीम हर्ष तथा गर्व से पूरित हो गया। वह इस बात के लिए भगवान् की कृतज्ञ हुईं कि वह एक महान् भक्त की जननी हैं।

नामदेव को जागतिक व्यापार में अभिरुचि प्रारम्भ से ही नहीं थी। वह रात-दिन विठोबा के अर्चन-पूजन में ही संलग्न रहते थे। इस बीच उनका विवाह राधाबाई से हो गया। राधाबाई उन महिलाओं में थीं जो सांसारिकता में ही लिप्त रहती हैं। गार्हस्थ-सम्बन्धी उत्तरदायित्वों के प्रति नामदेव की उपेक्षा के कारण उनके परिवार की निर्धनता चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। परिसा भागवत नामक एक भक्त ने

रुक्मिणी से अपने तुष्टिप्रद प्रसाद रूप में पारस पत्थर प्राप्त कर लिया। एक दिन परिसा की पत्नी ने उस पारस-शिलाखण्ड को अपनी सखी राधाबाई को दे दिया। राधाबाई ने पारस के इस शिला-खण्ड को अपने पति को दिखाते हुए कहा कि उनकी (नामदेव की) भक्ति परिसा भागवत की भक्ति के समक्ष नगण्य है। नामदेव ने उस पारस-शिलाखण्ड को नदी में फेंक दिया। दूसरे दिन इस घटना से अवगत हो कर परिसा ने नामदेव को बहुत डाँटा-फटकारा। नामदेव ने परिसा को वह स्थान दिखाया जहाँ उन्होंने उस शिला-खण्ड को फेंका था। परिसा ने वहाँ उसकी खोज की; किन्तु उसने आश्चर्यचकित हो कर देखा कि वहाँ एक शिला-खण्ड न हो कर अनेक पारसशिला के खण्ड थे। वह नामदेव की त्याग-भावना तथा आध्यात्मिक शक्तियों से अभिभूत हो गया।

जागतिक कार्यों के प्रति उनकी विरक्ति-भावना में अधिकाधिक वृद्धि होती गयी। उनकी अभिरुचि के एकमात्र केन्द्र भगवान् विठोबा थे। वे उनके समक्ष घण्टों बैठ कर या तो उनसे आध्यात्मिक विषयों पर वार्तालाप करते या भजन करते।

नामदेव जब महान् सन्त ज्ञानदेव से पण्ढरपुर में पहली बार मिले, तब उनकी आयु लगभग बीस वर्ष थी। नामदेव विठोबा के महान् भक्त थे; उन दोनों ने एक साथ तीर्थाटन के निमित्त समस्त पवित्र स्थानों की यात्रा की जो पाँच वर्षों में समाप्त हुई। इस अवधि में ज्ञानदेव नामदेव को किसी गुरु से दीक्षा-ग्रहण का परामर्श देते रहे जिससे वह स्वयं को सर्वव्यापी ईश्वर की अभिव्यक्ति के आत्यन्तिक बोध की स्थिति में प्रतिष्ठित कर अपने जीवन के चरम पुरुषार्थ की सिद्धि कर सकें। किन्तु यह सोच कर कि इससे विठोबा के प्रति उनकी निष्ठा तथा भक्ति के मार्ग में अवरोध उपस्थित हो जायेगा, वह इससे हिचकते रहे।

एक दिन इन लोगों ने सन्त गोरा, जो व्यवसाय से कुम्भकार थे, से कहा कि वह इस बात का निर्णय करें कि इन लोगों में अर्ध-पक्व अर्थात् ब्रह्म-साक्षात्कार में असफल कौन है। गौरा ने पात्र-परीक्षण के लिए प्रयुक्त काष्ठ-पट्टिका से उनमें से प्रत्येक के शिर को थपथपाया। जब उसने नामदेव के शिर को थपथपाया, तब वह स्वयं को आहत समझ कर चिल्ला उठे। यह देख कर वहाँ एकत्र अन्य जन यह कह कर हँस पड़े कि नामदेव अभी अर्ध-पक्व हैं और अध्यात्म में उनकी प्रज्ञा प्रतिष्ठित नहीं हो पायी है।

इस अवमानना से अत्यधिक क्षुब्ध हो कर नामदेव ने विठोबा से कहा कि स्वयं भगवान् कृष्ण से उनका (नामदेव का) अन्तरंग सम्बन्ध है; अतः उन्हें किसी गुरु से दीक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान् कृष्ण ने कहा कि नामदेव ने उनको पूर्णतः नहीं जाना है। नामदेव उनके इस कथन से सहमत नहीं हो सके। तब भगवान् कृष्ण ने उनको उस दिन अपने स्वरूप से परिचित होने की चुनौती दे दी जिसे नामदेव ने स्वीकार कर लिया। भगवान् कृष्ण एक पठान अश्वारोही के वेश में उनके सामने से निकल गये; किन्तु नामदेव उन्हें पहचान नहीं पाये। तब नामदेव ने गुरु की आवश्यकता के प्रति अपनी सहमति व्यक्त कर दी। तत्पश्चात् भगवान् विठोबा ने उनको विसोबा खेचर से दीक्षा ग्रहण करने का परामर्श दिया।

विसोबा खेचर ज्ञानदेव के शिष्यों में थे। वह उन दिनों अवन्ध्या नामक ग्राम में रहते थे। नामदेव ने वहाँ के लिए शीघ्र ही प्रस्थान किया। वह वहाँ दोपहर में पहुँचे। विश्राम के लिए उन्होंने एक मन्दिर में शरण ली। उस मन्दिर में उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसके पैर स्वयं देवता पर पड़े हुए थे। नामदेव यह देख कर स्तब्ध रह गये। उन्होंने उसे जगा कर उसके इस अधार्मिक एवं देव-द्रोही कृत्य के लिए डाँटा-फटकारा। वस्तुतः वह स्वयं विसोबा थे जिन्होंने कहा—''नामदेव, तुमने मुझे क्यों जगाया? क्या इस संसार में कोई ऐसा भी स्थान है जहाँ ईश्वर

परिव्याप्त न हो? यदि तुम समझते हो कि इस प्रकार के स्थान का अस्तित्व सम्भव है, तो मेरे पैर उठा कर वहीं रख दो।'' नामदेव ने उनके पैरों को अपने हाथों में ले कर किसी अन्य दिशा में घुमा दिया; किन्तु देवता उधर भी विद्यमान थे। नामदेव ने उनके पैरों को पुनः अन्य दिशा में घुमाया; किन्तु देवता वहाँ भी विद्यमान मिले। नामदेव को विसोबा के पैरों को रखने के लिए कोई भी ऐसा स्थान न मिला जहाँ देवता के पद-मर्दित होने की आशंका न हो। ईश्वर सर्वव्यापी था। ईश्वर की सर्वव्यापकता के इस चरम सत्य के बोध के पश्चात् नामदेव ने विसोबा के चरणों पर कृतज्ञतापूर्वक विनम्र भाव से आत्म-समर्पण कर दिया। इसके पश्चात् विसोबा ने उन्हें अनेक परामर्श दिये।

विसोबा से दीक्षा ग्रहण करने के कुछ दिनों के पश्चात् नामदेव एक स्थान पर बैठ कर भजन कर रहे थे। इस बीच एक कुत्ता उनके मध्याह्न-भोजन की रोटी ले कर भाग गया। नामदेव उस कुत्ते के पीछे दौड़े; किन्तु उनके हाथ में डण्डा न हो कर घृत-पात्र था। उन्होंने कुत्ते से कहा—''हे विश्वेश्वर, आप सूखी रोटी क्यों खाना चाहते हैं? इसके लिए कुछ घी भी लेते जाइए। इससे रोटी सुस्वादु हो जायेगी।'' अब वह आत्म-साक्षात्कार की अतिरेकावस्था को प्राप्त हो चुके थे।

नामदेव किसी बृहद् ग्रन्थ के प्रणेता नहीं थे; किन्तु वह अपने पीछे भक्ति-सुधा से ओत-प्रोत तथा ईश्वर-प्रेम से परिपूरित अनेक अभंग अथवा संक्षिप्त कविताएँ छोड़ गये हैं। ये रचनाएँ ईश्वर के प्रति भक्ति रसामृत से ओत-प्रोत हैं।

नामदेव के उपदेशों का सार इस प्रकार है : ''सदा-सर्वदा भगवन्नाम लेते रहो। भगवान् के अखण्ड स्मरण में लीन रहो। भगवान् की महिमा का श्रवण करो। अपने हृदय में भगवान् का ध्यान करो। अपने हाथों से भगवान् की सेवा करो। उनके चरण-कमलों पर अपना शिर रखो। कीर्तन करो। तुम अपनी भूख-प्यास भूल जाओगे। भगवान् तुम्हारे निकट आ जायेंगे। तुम अमरत्व तथा शाश्वत परमानन्द प्राप्त करोगे।'' उन्होंने १३५० ई. में पण्ढरपुर में समाधि ली।

जनाबाई के उल्लेख के अभाव में नामदेव के जीवन का कोई भी विवरण अपूर्ण ही रहेगा। वह नामदेव की गृह-सेविका थी। उसकी गणना नामदेव के अन्तरंग अनुयायियों में की जाती है। नामदेव की सेवा तथा भगवान् विठोबा के गुण-गान के अतिरिक्त उसकी अन्य कोई भी महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। उदाहरण के लिए उसने अपनी एक कविता में कहा है : ''तुम्हारे आदेशानुसार भले ही मुझे इस संसार में जन्म ग्रहण करना पड़े; किन्तु तुमसे मेरी प्रार्थना है कि मेरी इच्छाओं की पूर्ति होती रहे। मेरी इच्छा है कि मैं अपने प्रत्येक जन्म में पण्ढरपुर का दर्शन तथा नामदेव की सेवा करती रहूँ। मुझे पक्षी, शूकरी, श्वान या मार्जारी होने का खेद नहीं होगा; किन्तु मेरी यह शर्त है कि उक्त जन्मों में मुझे पण्ढरपुर के दर्शन तथा नामदेव की सेवा के अवसर अनिवार्य रूप से प्राप्त होते रहें। नामदेव की सेविका की यही महत्त्वाकांक्षा है।''

उक्त शब्दों में जनाबाई का सम्पूर्ण दर्शन तथा उसकी अभीष्ट-सिद्धि की विधि निहित है। विठोबा के प्रति उसकी भक्ति इतनी प्रगाढ़ एवं निष्कपट थी कि भगवान् उसके कौटुम्बिक कर्तव्य का भार-वहन एक सीमा तक स्वयं कर लिया करते थे। भगवान् के प्रति अपनी सेवा-भक्ति के माध्यम से उसने स्वयं को पूर्णतः विसर्जित कर उनसे तादात्म्य स्थापित कर लिया था। जनाबाई एक महान् आत्मा थी और उससे भी महान् थे नामदेव।

स्वामी शिवानन्द

ईश्वर से सम्बद्ध रहें

हृदय के **अन्तरतम** से **भावपूर्ण** नित्य-प्रार्थना के द्वारा **ईश्वर** को अपने हृदय के साथ **सम्बद्ध** बना लीजिए। अपने हृदय को उसके समक्ष खोल कर रख दीजिए। किसी भी बात को गुप्त न रखिए। उससे शिशु के समान ही बातें कीजिए। नम्र तथा **सरल** बनिए। **पश्चात्तापपूर्ण** हृदय से अपने पापों की **क्षमा** के लिए उससे **प्रार्थना** कीजिए। उसकी **कृपा** के लिए उससे **याचना** कीजिए। मानवी सहायता पर निर्भर न रहिए। **एकमेव** ईश्वर पर ही **आश्रित** रहिए। आप सब-कुछ प्राप्त कर लेंगे। आप उसके **दर्शन** प्राप्त करेंगे।

अपने **जप, कीर्तन, ध्यान** तथा **गीता** और **भागवत** के **स्वाध्याय** को नियमपूर्वक कीजिए। **आध्यात्मिक साधना** में **नियमितता** सबसे अधिक **महत्वपूर्ण** है। इसे कभी भी न भूलिए।

स्वामी शिवानन्द

अक्षरों के इस जंगल में से ऊपर वाले गहरे काले रंग में दिये गये शब्दों को खोजिए :-

आ	स	या	स्वा	अ	प्रा	ए	प	स	द	स्वा	या	कृ	गी
ध्या	म्ब	च	ध्या	न्त	र्थ	क	श्चा	भा	ग	ब	त	पा	द्ध
म	ह	ई	श्व	र	गी	मे	त्ता	व	पू	प	आ	श्रि	त
कृ	नि	य	मि	त	ता	ज	प	पू	र्ण	श्चा	ध्या	श्व	र
ए	क	मे	हृ	म	ह	त्व	पू	र्ण	की	त्ता	त्मि	र्श	न
भा	ग	सा	द	र्श	न	गी	र्ण	स्वा	र्त	ए	क	मे	व
अ	न्त	ध	य	स	र	ल	क्ष	ध्या	न	प्रा	ग	व	त
या	च	ना	त्मि	म्ब	पू	श्रि	मा	य	द	र्थ	मि	त	ता
न	र	व	क	द्ध	र्ण	त	प	पा	य	ना	प	ह	त्व

मुख्यालय आश्रम में श्री कृष्ण जयन्ती महोत्सव

कृष्णेति मंगलं नाम यस्य वाचा प्रवर्तते।
भस्मीभवन्ति तस्याशु महापातककोटय:।।

"जो व्यक्ति भगवान् श्री कृष्ण के पावन नाम का सतत स्मरण करता है, उसके करोड़ों पाप अति शीघ्र भस्मीभूत हो जाते हैं।"

मुख्यालय आश्रम में श्री कृष्ण जयन्ती का पावन दिवस २ सितम्बर २०१८ को अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति एवं उल्लासपूर्वक मनाया गया।

उत्सव के मंगलाचरण के रूप में २८ अगस्त से १ सितम्बर २०१८ तक प्रतिदिन दो घण्टे

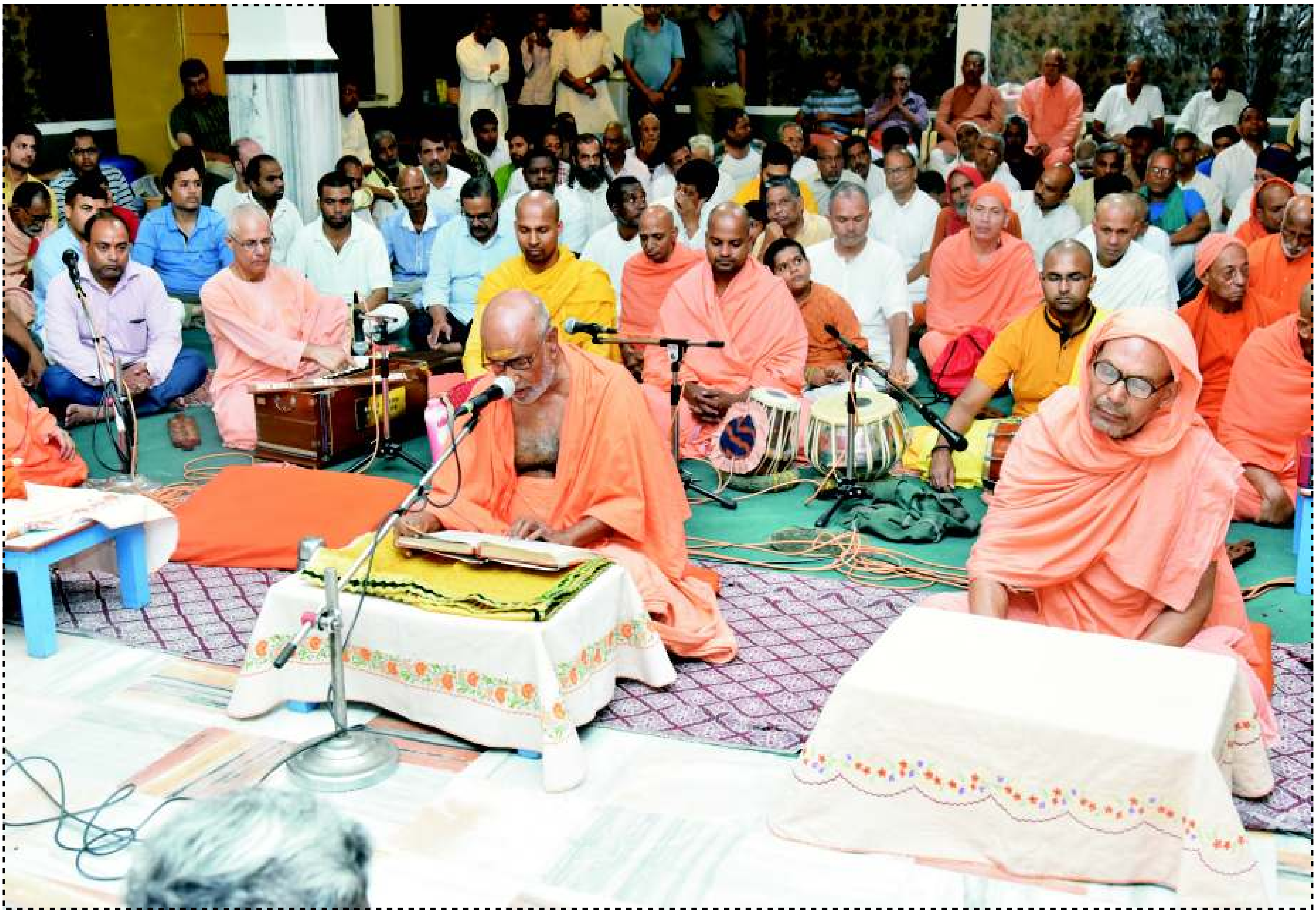

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' तथा **'श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे'** के पावन द्वादशाक्षरी मन्त्रों का सामूहिक कीर्तन किया गया। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रात:कालीन ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान सत्र एवं प्रभातफेरी के उपरान्त द्वादशाक्षरी मन्त्र का अखण्ड कीर्तन किया गया। आश्रम के साधकों, भक्तों एवं अतिथियों ने अत्यन्त भक्तिभाव और उत्साह सहित प्रात: ७ बजे से सायं ६.३० बजे तक इस अखण्ड सामूहिक जप-कीर्तन में भाग लिया।

श्री विश्वनाथ मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित भगवान् श्री मुरली मनोहर की पारम्परिक पूजा रात्रि ८ बजे, भगवान् के वैदिक मन्त्रों एवं भजन-कीर्तन सहित अभिषेक के साथ की गयी। उसके उपरान्त भगवान् के विग्रह का अलंकारों एवं रंगबिरंगी पुष्प-मालाओं से भव्य शृंगार किया गया जिससे भगवान् का मनमोहक विग्रह और भी अधिक मनोमुग्धकारी सौन्दर्य से दमक उठा। तदुपरान्त भगवान् की पुष्पार्चना सहस्रनामावली सहित की गयी। अभिषेक एवं अर्चना में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित हो कर आश्रम के समस्त अन्तेवासी, अतिथि एवं दर्शनार्थी अत्यन्त आनन्दित हुए और स्वयं को आशीर्वादित अनुभव किया।

तदुपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्द में से भगवान् के दिव्य अवतरण का प्रसंग पढ़ा। मंगल आरती के उपरान्त सभी को पावन प्रसाद दिया गया।

भगवान् श्री कृष्ण और सद्गुरुदेव की प्रचुर कृपा-वृष्टि सभी पर हो!

♦ ♦ ♦

परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के १० वें पुण्यतिथि आराधना दिवस का कार्यक्रम

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १० वीं पुण्यतिथि आराधना का पावन दिवस, मुख्यालय आश्रम में ७ सितम्बर २०१८ को अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति सहित मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रात: ५ बजे ब्राह्ममुहूर्त की प्रार्थना एवं ध्यान सत्र से हुआ जिसमें परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने सन्देश में कहा कि पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का दिव्य जीवन हमारे लिए एक ऐसा आदर्श उदाहरण है जिसका हम सभी को अनुसरण करना चाहिए। इसके उपरान्त प्रभातफेरी, श्री विश्वनाथ मन्दिर में विशेष पूजा तथा आश्रम यज्ञशाला में विशेष हवन किया गया।

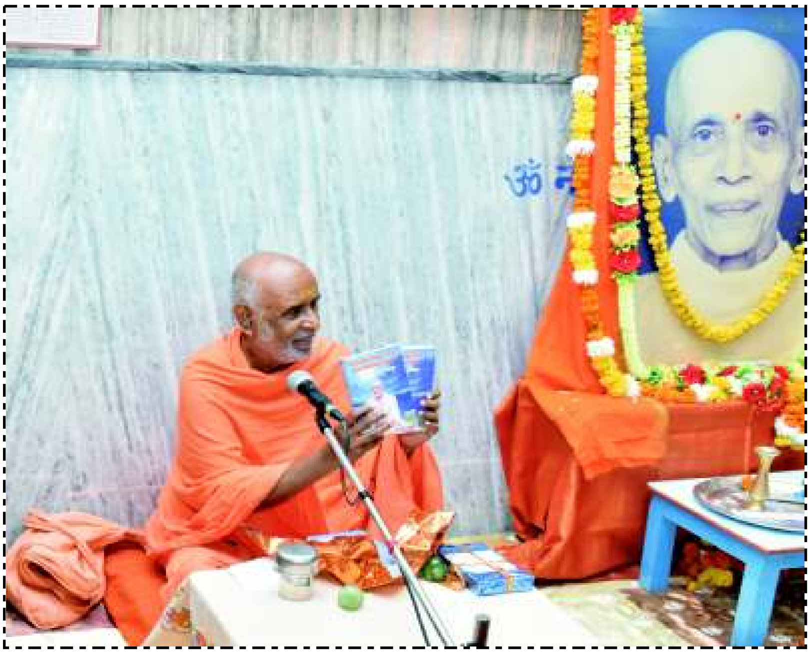

पूर्वाह्न सत्र में, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की समाधि पर पारम्परिक पूजा के उपरान्त, समाधि हॉल में सद्गुरुदेव की पावन पादुकाओं की महापूजा की गयी। आश्रम के वरिष्ठ स्वामी जी, संन्यासी, ब्रह्मचारी, भक्त जन एवं अतिथि इस पूजा में अत्यन्त श्रद्धा सहित सम्मिलित हुए। तदुपरान्त आश्रम के संन्यासियों और ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किये गये परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रिय भजन एवं कीर्तन ने भक्त श्रोताओं के हृदय पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की सुधन्य स्मृतियों से आपूरित कर दिये।

रात्रि सत्संग में, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज, श्री स्वामी अमृतरूपानन्द माता जी, यू. के. के श्री चालर्स कन्नै तथा मलेशिया के श्री पन्नीर्सेल्वाम ने पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के दिव्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाले अपने संक्षिप्त सन्देशों के माध्यम से, पूज्य श्री स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं। उसके उपरान्त पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के डीवीडी शो के माध्यम से दर्शन एवं प्रवचनों ने सभी उपस्थित श्रोताओं के हृदय आनन्द-विह्वल कर दिये। इस पावन दिवस के उपलक्ष्य में पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। आरती, प्रसाद एवं ज्ञान-प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सद्गुरुदेव तथा परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की कृपा सभी पर हो!

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १३१ वीं जयन्ती का महोत्सव

परम आराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १३१ वीं जयन्ती मुख्यालय आश्रम में ८ सितम्बर २०१८ को अत्यन्त हर्षोल्लास एवं श्रद्धा-भक्ति सहित मनायी गयी।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकालीन प्रार्थना एवं ध्यान तथा उसके तुरन्त बाद परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज के प्रेरणाप्रद प्रवचन के साथ हुआ जिसके बाद भारी संख्या में एकत्रित भक्तों द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक दिव्य नाम संकीर्तन करते हुए प्रभातफेरी की गयी। आश्रम यज्ञशाला में विश्व-शान्ति एवं जन-कल्याण हेतु विशेष हवन हुआ।

पूर्वाह्न सत्र में, भव्य-सुसज्जित समाधि मन्दिर में परम पावन सद्गुरुदेव की पादुकाओं की महापूजा की गयी। परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव को श्रद्धा-सुमन समर्पित करने के लिए उपस्थित आश्रम के

संन्यासियों, ब्रह्मचारियों, भक्तों एवं अतिथियों से समाधि हॉल भरा हुआ था। पूजा के उपरान्त सद्गुरुदेव की दिव्यता की महिमा का भजन-कीर्तन के माध्यम से वर्णन किया गया तथा परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज द्वारा गुरुदेव के जीवन एवं शिक्षाओं पर प्रबोधक सन्देश दिया गया। इस पावन उत्सव पर

सद्गुरुदेव की ८ पुस्तकों और 'द डिवाइन लाइफ' एवं 'दिव्य जीवन' मासिक पत्रिकाओं के जयन्ती-अंकों का विमोचन भी किया गया।

सायंकाल में सद्गुरुदेव की मधुर स्मृति में विश्वनाथ घाट पर गंगा माँ की विशेष पूजा और आरती की गयी। रात्रि सत्संग में, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने सद्गुरुदेव के प्रेरणाप्रद जीवन पर संक्षिप्त सन्देशों के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं। आरती एवं विशेष प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आनन्दकुटीर के दिव्य देवता, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज अपने चरण-कमलों में निष्ठापूर्ण भक्ति का आशीर्वाद हम सबको प्रदान करें! ♦ ♦ ♦

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती का उत्सव

परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १०२ वाँ पावन जन्मोत्सव मुख्यालय आश्रम में २४ सितम्बर २०१८ को अत्यधिक पवित्रता एवं श्रद्धा-भक्ति सहित मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः ५ बजे सद्गुरुदेव की दिव्य सन्निधि में प्रार्थनाओं एवं ध्यान सहित पावन समाधि हॉल में किया गया। इसके उपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज का उद्‌बोधन तथा दिव्य नाम का सुमधुर आह्लादक गायन हुआ। श्री विश्वनाथ मन्दिर में विशेष पूजा तथा आश्रम यज्ञशाला में विशेष हवन भी किया गया।

पूर्वाह्न में समाधि मन्दिर में सद्गुरुदेव की पावन पादुकाओं की पूजा की गयी। समाधि हॉल ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, साधकों तथा अपने श्रद्धेय गुरुमहाराज को श्रद्धासुमन समर्पित करने

हेतु आये हुए अन्य भक्तों से खचाखच भरा हुआ था। पूजा के तुरन्त बाद एक संक्षिप्त सत्संग आयोजित किया गया था जिसमें आश्रम के संन्यासियों, ब्रह्मचारियों और डी एल एस हाँग-काँग शाखा के भक्तों द्वारा पूज्य श्री स्वामी जी महाराज को श्रद्धापूर्ण गीत-संगीतांजलि समर्पित की गयी।

रात्रि सत्संग में तमिलनाडु, मदुरै के 'ॐ साधना सैन्ट्रल स्कूल' के बच्चों ने शास्त्रीय नृत्य, स्वाँग-प्रदर्शन तथा सद्गुरुदेव के प्रेरणाप्रद जीवन पर आधारित नाटिका से युक्त एक अति सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने प्रेरक शब्दों एवं उपहार-बैगों सहित उन्हें आशीर्वादित किया। इस पावन अवसर पर चार पुस्तकें और पुस्तिकाएँ भी विमोचित की गयीं। आरती एवं विशेष प्रसाद सहित सत्संग समाप्त हुआ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रचुर आशीर्वाद सब पर हों! ◆ ◆ ◆

युग्म प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम का शुभारम्भ

वर्ष २०१८, भजन हॉल में आयोजित अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ प्रारम्भ होने तथा श्री विश्वनाथ भगवान् की विश्वनाथ मन्दिर में प्रतिष्ठा होने की प्लेटिनम जुबली का पावन वर्ष है।

अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन की प्लेटिनम जुबली मनाने के लिए मुख्यालय आश्रम द्वारा ७५ दिवसीय प्रभातफेरी एवं भजन हॉल में विभिन्न डी एल एस शाखाओं द्वारा महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। पावन यज्ञ का २० सितम्बर को शुभारम्भ किया गया तथा डी एल एस भेल शाखा (हरिद्वार), डी एल एस मोरबी एवं डी एल एस सुरेन्द्रनगर शाखा (गुजरात), डी एल एस राजा पार्क शाखा

(राजस्थान) और बाबनपुर शाखा (ओडिशा) ने अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक प्रभातफेरी एवं अखण्ड महामन्त्र कीर्तन में २० से ३० सितम्बर तक यज्ञाहुति के रूप में भाग लिया।

युग्म प्लेटिनम जुबली के ही एक अंग के रूप में २७ से ३० सितम्बर तक उद्धव गीता का आयोजन किया गया, जिसमें वृन्दावन के हित राधाबल्लभ सम्प्रदाय के पूज्य श्री हित अम्बरीश जी महाराज ने अत्यन्त भव्य सुसज्जित स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन में 'उद्धवगीता' पर अपने प्रवचनों द्वारा भक्त समुदाय को आशीर्वादित किया।

पूज्य हित अम्बरीश जी ने अपने प्रवचनों में उद्धवगीता को उद्धृत करते हुए तथा कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, बुल्लेशाह और गुरु नानकदेव इत्यादि विविध सन्तों की सुन्दर रचनाओं को उद्धृत करते हुए उपस्थित श्रोता समूह को

भगवान् के चरण-कमलों का आश्रय लेने और उनके नाम का सतत स्मरण करते हुए इस दुस्तर संसार सागर से पार उतर जाने के लिए प्रेरणा दी।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा और सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आशीर्वाद सब पर हों!

♦ ♦ ♦

शिवानन्द होम द्वारा सेवा

''शिवानन्द होम उन एकाकी एवं मरणासन्न लोगों की प्रेमपूर्ण देख-रेख का एक केन्द्र है, जो सड़क के किनारे पड़े मिलते हैं, जिनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है, जिन लोगों के रहने के लिए कोई घर नहीं है, जिनका न तो स्थायी और न ही अस्थायी रूप से कोई ठिकाना है, जो रोगग्रस्त हो जाते हैं, गुम हो जाते हैं अथवा अपने परिवार द्वारा त्याग दिये जाते हैं।''

—परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

शिवानन्द होम में एक रोगी भरती किया गया जिसे लकवा हो गया था और सार्वजनिक चिकित्सालय में भरती भी करवा दिया गया था। किन्तु जब वहाँ यह देखा गया कि वह एड्स रोग से ग्रसित है, तब तुरन्त ही उसे छुट्टी दे दी गयी। मस्तिष्क के वाणी केन्द्र में चोट लगने से हुए वाचाघात से प्रभावित, वह बोल पाने में असमर्थ था। सुनना और समझ सकना अप्रभावित किन्तु अन्य लोगों को समझ और समझा न पाना। यह ऐसी स्थिति है कि इसमें वे आपसे बात करना बन्द कर देते हैं और सभी आपस में एक-दूसरे से आपके सम्बन्ध में वार्तालाप करते जाते हैं। परस्पर समझने-समझाने में अन्तराल—आपकी ओर ऐसे देखते हुए, मानो आप मन्दबुद्धि हों—आपसे ऊँची आवाज़ में बात करते हुए, जैसे आप सुनने में अक्षम हों। जब उसे एड्स से ग्रसित पाया गया तो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। पुन: वार्तालाप में अन्तराल—कारण—उस रोग का भय और आशंका जो अब भी गलत धारणाओं से आच्छादित, पुरानी धारणाओं से ग्रसित है, जिसके साथ अभी भी कलंक लगे हुए हैं। जो प्राय: एक गुप्त जीवन से, रहस्यपूर्ण जीवन से जुड़ा हुआ है, जीवन भर के लिए जिसके साथ लांछन चिपका दिया जाता है।

एक ७५ वर्ष की वृद्धा को त्रिवेणी घाट से उठाया गया, जो बिलकुल एकाकी पड़ी हुई थी, वह अपने ही घर से निष्कासित कर दी गयी थी। उसके शिर में १० सैं. मी. गहरा संक्रमित घाव था, जिसमें कीड़े रेंग रहे थे। इसके अतिरिक्त जो-कुछ थोड़ा-बहुत उसके पास अपना कहने को था, वह सब-कुछ गुण्डों ने मिल कर लूट लिया। और वहाँ से—एकाकी, गहन पीड़ा और खुजली, अन्य कुछ नहीं, कुछ भी नहीं, केवल प्रार्थना भरे हृदय के अतिरिक्त—उसे उठा कर लाया गया था।

उनकी करुणाजनक स्थिति हमें गुरुमहाराज की याद दिलाता है, जो प्राय: समानुभूति के सम्बन्ध में बात किया करते थे, स्वयं को दूसरे व्यक्ति की स्थिति और परिस्थिति में रखते हुए सोचने का प्रयास करना और फिर—तब हमें कैसा लगता—उसे अनुभव करना। कहीं भी कुछ या कोई अपना नहीं। एक निष्कासित, अनचाहा, असहाय और आशा-विहीन, साथ में एक कलंक चिपका हुआ। किन्तु गुरुदेव हमें इस विषाद और आत्मदया से बाहर खींच कर लेते हैं, हमें हमारे वास्तविक नाम के द्वारा पुकारते हुए, ''अमर आत्मा हो आप'', और गुरुमहाराज हमें हमारी वास्तविक पहचान से सम्बोधित करते हुए, ''सुधन्य अमर आत्मा, परमपिता परमात्मा की दिव्य सन्तानो!'' कह कर, हमें पहचानपट्टिका और नामपट्टिका देते हैं। यही नामपट्टिका है जो हमारे साथ सदा रहने वाली है, यही हमारी वास्तविक नामपट्टिका है, हममें से हरेक के लिए, हमारा यह वास्तविक नाम है जो उस परमात्मा के हाथों में लिखा हुआ है। इस संसार के सभी पहचानपट्टों और नामपट्टों से परे। यह नामपट्ट ही हमारी पहचान बना रहने वाला है। जरा कल्पना करें इसकी!

दोनों रोगी अभी शिवानन्द होम में ही भरती हैं। दोनों गुरुदेव की प्रेम भरी देख-रेख, निर्देशन और उपचारक शक्ति से तथा चिकित्सीय उपचारों, मरहम-पट्टी, उपयुक्त आहार और उपचारपूर्ण देख-रेख द्वारा स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

उनके आशीर्वाद हम सब पर हों। ॐ श्री सद्गुरवे नम:।

''हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तुम्हारा ही स्मरण करें। सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें। तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो। सदा हम तुममें ही निवास करें।''

—स्वामी शिवानन्द

♦ ♦ ♦

सूचना

आध्यात्मिक सम्मेलन—'दिव्य नाम की महिमा'

'डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश' में, २८ से ३० नवम्बर २०१८ तक, युग्म प्लेटिनम जुबली के तत्त्वावधान में एक आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का मूल विषय है, 'दिव्य नाम की महिमा'। सम्मेलन में कुल दो सत्र—प्रातः ९ से ११ और सायं ३.३० से ५.३० बजे तक होंगे। इस सम्मेलन में विभिन्न संस्थाओं के सन्त एवं विद्वान् श्रोताओं को सम्बोधित करने के लिए भाग लेंगे।

सभी भक्त इस में सम्मिलित होने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

दिव्य जीवन संघ, सुरेन्द्रनगर शाखा, गुजरात में त्रिदिवसीय संयम शिविर

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अनुकम्पा से दिव्य जीवन संघ गुजरात की सुरेन्द्रनगर शाखा अपनी हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर, ११ से १३ नवम्बर २०१८ तक एक त्रिदिवसीय संयम सप्ताह आयोजित कर रही है।

इस शिविर में शिवानन्द आश्रम के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य गणमान्य वक्ता पधारेंगे।

नामांकन निःशुल्क है। अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र :

श्री स्वामी गोपालानन्द जी, डी. एल. एस. सुरेन्द्रनगर शाखा — मो. ९४२८२ ९२३५२

श्री राजेश भट्ट, डी. एल. एस. सुरेन्द्रनगर शाखा — मो. ९८२५२ २४३५५

शिविर स्थल : दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम
रतनपुर, सुरेन्द्रनगर, गुजरात–३६३०२०

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

महत्त्वपूर्ण सूचना

योग–वेदान्त अरण्य अकादमी (द डिवाइन लाइफ सोसायटी)

शिवानन्दनगर—२४९ १९२, जिला : टिहरी–गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

प्रवेश–सम्बन्धी सूचना

लगभग दो माह **१–३–२०१९ से २९–४–२०१९** तक के **९१ वें** आवासीय बेसिक योग–वेदान्त पाठ्यक्रम (कोर्स) में भाग लेने हेतु आवेदन–पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। यह पाठ्यक्रम द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, शिवानन्दनगर (ऋषिकेश) के अकादमी–परिसर में आयोजित किया जायेगा।

इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

१. इस पाठ्यक्रम में केवल भारतीय (पुरुष) नागरिक भाग ले सकते है। कक्षाएँ कोर्स के लिए विद्यार्थियों के रूप में पंजीकृत प्रविष्ट आवेदनकर्ताओं के लिए संचालित की जायेंगी।

२. आयु–वर्ग—२० और ६५ वर्ष के बीच

३. योग्यताएँ :
   (क) गहन आध्यात्मिक अभीप्सा तथा योग–वेदान्त के अभ्यास में गहन रुचि रखने वाले स्नातक उपाधिधारी पुरुषों को वरीयता दी जायेगी।
   (ख) अँगरेजी भाषा में धाराप्रवाह वार्तालाप करने की क्षमता होनी चाहिए; क्योंकि शिक्षण का माध्यम अँगरेजी भाषा है।
   (ग) स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए।

४. पाठ्यक्रम की अवधि—योग, वेदान्त तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर लगभग दो माह की अवधि का आवासीय पाठ्यक्रम।

५. पाठ्यक्रम का विषय–क्षेत्र तथा पाठ्यचर्या (Syllabus) :
   (क) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का रूपरेखीय अध्ययन, उपनिषदों का अध्ययन, धार्मिक चेतना का परिशीलन, भगवद्गीता का अध्ययन, पतंजलि की योग–प्रणाली, नारद–भक्ति–सूत्र तथा स्वामी शिवानन्द का दर्शन।
   (ख) व्यावहारिक—आसन, प्राणायाम, ध्यान, कर्मयोग, भाषण, समूहों में चर्चा, प्रश्न–उत्तर और अन्तिम परीक्षा।
   (ग) वैकल्पिक विषय के रूप में प्रारम्भिक संस्कृत के शिक्षण का भी प्रावधान है। जो प्रतिभागी इसमें रुचि रखते हों, वे इस संस्कृत–कक्षा से भी लाभ उठा सकते हैं।

६. प्रशिक्षण, आवास तथा भोजन के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की ओर से शुद्ध शाकाहारी भोजन (जलपान तथा दो बार भोजन प्रतिदिन) उपलब्ध कराया जायेगा। धूम्रपान, मद्यपान तथा नशीले पदार्थों का सेवन सर्वथा वर्जित है।

७. भरे हुए आवेदन–पत्र अधोलिखित पदाधिकारी के पास **१५–१–२०१९** तक पहुँच जाने चाहिए।

८. योग–वेदान्त अरण्य अकादमी का उद्देश्य विद्यार्थियों को शैक्षिक–सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उन्हें इस योग्य भी बनाना है कि वे अपने व्यक्तित्व को पूर्ण तथा संघटित बना सकें तथा हितकारी एवं सफल जीवन व्यतीत कर सकें। अकादमी में संचालित किये जाने वाले पाठ्यक्रम का स्वरूप छात्र को केवल शास्त्रीय ज्ञान अथवा मूलपाठ–विषयक जानकारी प्रदान करने की अपेक्षा अनुशासनात्मक अधिक है।

आवेदन–पत्र तथा विवरण–पत्रिका प्राप्त करने के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें :

आवेदन–पत्र तथा विवरण–पत्रिका को वेबसाइट से भी डाउनलोड किया जा सकता है।
www.sivanandaonline.org
Or contact the e-mail:
yvfacademy@gmail.com

शिवानन्दनगर
अक्तूबर, २०१८

कुल–सचिव (रजिस्ट्रार)
योग–वेदान्त अरण्य अकादमी
द डिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : शिवानन्दनगर—२४९ १९२
जिला : टिहरी–गढ़वाल, उत्तराखण्ड
फोन : ०१३५–२४३३५४१ (अकादमी)

नोट— (१) चयनित विद्यार्थियों को अकेले आना चाहिए—पारिवारिक सदस्यों अथवा सम्बन्धियों के साथ नहीं। (२) आवश्यकता पड़ने पर क्रमसंख्या ५ के अन्तर्गत उपर्युक्त पाठ्यचर्या में बिना किसी पूर्व–सूचना के किंचित् परिवर्तन किया जा सकता है।

केवल भारत में लागू

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के सदस्यता–शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता–शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता–शुल्क* रु. १५०/–

प्रवेश–शुल्क . . . . रु. ५०/–

सदस्यता–शुल्क . . . . रु. १००/–

२. सदस्यता नवीकरण–शुल्क (वार्षिक) रु. १००/–

३. नयी शाखा खोलने का शुल्क** रु. १०००/–

प्रवेश–शुल्क . . . . रु. ५००/–

सम्बद्धता–शुल्क . . . . .रु. ५००/–

४. शाखा–सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) रु. ५००/–

* सदस्यता के इच्छुक प्रार्थी कृपया प्रार्थना–पत्र के साथ अपना फोटो पहचान–पत्र (Photo Identity) तथा निवास–स्थान के प्रमाण–स्वरूप कोई दस्तावेज (Residential Proof) भेजें।

** नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता–शुल्क और शाखा–सम्बद्धता–शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

आश्रम को धन भेजने सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्देश

कृपया धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा **“The Divine Life Society” Shivanandanagar, Uttarakhand** के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक ‘ऋषिकेश’ में देय होना चाहिए।

इलेक्ट्रानिक मनी आर्डर के माध्यम से धन भेजते समय कृपया एक पत्र में इलेक्ट्रानिक मनी आर्डर नम्बर (EMO), भेजने की तारीख तथा उद्देश्य लिख कर भेजें।

व्यवस्थागत तथा लेखागत कारणों से, हमारे बैंक एकाउन्ट में बिना पूर्व अनुमति के सीधी भेजी गयी धनराशि सोसायटी द्वारा स्वीकार नहीं की जाती है।

डी एल एस शाखाओं के प्रतिवेदन

भारतीय शाखाएँ

आस्का (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार एवं शनिवार को चल सत्संग तथा साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त, २२ जुलाई को विशेष साधना दिवस भजन-कीर्तन, पादुका पूजा, श्रीमद्गुरुगीता और श्रीमद्भगवद्गीता पाठ सहित आयोजित किये गये।२७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा तथा २८ से ४ अगस्त तक साधना सप्ताह मनाया गया। इनका समापन प्रसाद, ज्ञानप्रसाद वितरण के साथ हुआ। इसके अतिरिक्त २९ और ३१ जुलाई को चल सत्संग किये गये।

अम्बाला (हरियाणा): नवम्बर एवं दिसम्बर माह में प्रत्येक रविवार एवं मंगलवार को ध्यान, भजन-कीर्तन, स्वाध्याय और हनुमान चालीसा पाठ इत्यादि सहित नियमित सत्संग चलते रहे। रोगियों की प्रतिदिन नि:शुल्क होमियोपैथी चिकित्सा सेवा तथा जल-सेवा पूर्ववत् चलती रहीं।

आंकोली (ओडिशा): शाखा के साप्ताहिक सत्संग रविवारों को और चल सत्संग गुरुवारों को अन्नदान सेवा सहित चलते रहे, संक्रांति को हनुमान चालीसा पाठ किया गया। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा नगर संकीर्तन और हवन सहित मनायी गयी। बालकों के साथ विशेष सत्संग रविवारों को चलते रहे।

अनगुल (ओडिशा): रविवारों को साप्ताहिक सत्संग गुरु पादुका पूजा सहित किये गये तथा गुरुपूर्णिमा २७ जुलाई को नगर संकीर्तन, गीता पाठ, विष्णुसहस्रनाम एवं हनुमान चालीसा पाठ सहित मनायी गयी।

बलांगीर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक योग कक्षा, पादुका पूजा और सायंकालीन सत्संग तथा गुरुवारों एवं शनिवारों को साप्ताहिक सत्संग चलते रहे। २७ को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा, भजन-कीर्तन सहित मनायी गयी। एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पाठ किया गया। शाखा की नियमित गतिविधियों में चिदानन्द हैल्थ सेंटर द्वारा औषधियों सहित २१८ रोगियों की चिकित्सा सेवा की गयी।

बाबनपुर (ओडिशा): जुलाई-अगस्त मास में शाखा द्वारा २७ जुलाई को पादुका पूजा, जप और सायंकालीन प्रवचन सहित मनायी गयी तथा १७ अगस्त को विशेष सत्संग सुन्दरकाण्ड और हनुमान चालीसा पारायण सहित किया गया।

बंगलूरु (कर्नाटक): शाखा द्वारा ३ से ५ अगस्त तक सद्गुरुदेव के पुण्यतिथि आराधना दिवस पर तिरुप्पुगल भजन, रमन लहरी का सांस्कृतिक कार्यक्रम, पादुका पूजा, सायंकाल में प्रवचन तथा गुरुदेव की शिक्षाओं को श्रवण-दर्शन शो के माध्यम से दिखाने का कार्यक्रम किया गया। समापन आरती और नारायण सेवा से किया गया। इसके अतिरिक्त गुरुवार और रविवार को पादुका पूजा, गुरुदेव की पुस्तकों से स्वाध्याय, गुरु गीता एवं भगवद्गीता पाठ किया गया, भजन, गीता और उपनिषद्-प्रशिक्षण की कक्षाएँ दूसरे और चौथे रविवारों को तथा विशेष सत्संग भजनों सहित २६ अगस्त को, अखण्ड महामृत्युञ्जय मन्त्र जप प्रत्येक तीसरे रविवार को किया जाता रहा।

बरगढ़ (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक स्वाध्याय, प्राणायाम और ध्यान, सोमवारों को रुद्राभिषेक, गुरुवारों को गुरुपादुका पूजा, शनिवारों को सत्संग, रविवारों को गीता पारायण और उस पर विचार विनिमय किया गया। उड़िया पत्रिका 'महत् वाणी' नि:शुल्कवितरणार्थ छापी गयी; शिवानन्द होमियो डिस्पेंसरी के माध्यम से निर्धन रोगियों का उपचार भी किया जाता रहा। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव का ५५ वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस पादुका पूजा और महामृत्युञ्जय मन्त्र जप सहित मनाया गया।

ब्रह्मपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा रविवारों को साप्ताहिक सत्संग, शनिवारों को चल सत्संग, ८ और २४ को प्रत्येक मास पादुका पूजा के कार्यक्रम चलते रहे, साथ ही

एकादशियों को भगवद्गीता पाठ, संक्रान्ति को सुन्दरकाण्ड पारायण तथा तीसरे रविवार को साधना दिवस मनाया गया। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा तथा ५ अगस्त को गुरुदेव का आराधना दिवस नगर-कीर्तन, जप, पादुका पूजा, अर्चना, गीता पाठ और प्रवचनों इत्यादि सहित मनाया गया।

भुवनेश्वर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक, साप्ताहिक और चल सत्संग, मंगलवारों को भजन सन्ध्या तथा नि:शुल्क मेडिकल शिविर चलते रहे। श्री रामतारक मन्त्र जप २४ को, गुरुपूर्णिमा और गुरुदेव का आराधना दिवस २७ जुलाई से ५ अगस्त तक पादुका पूजा, अर्चना, तत्त्व बोध, गुरुगीता एवं पञ्चदशी पर प्रवचनों सहित मनाये गये

भुवनेश्वर महिला शाखा(ओडिशा): शाखा द्वारा १ से ९ जुलाई तक रामचरितमानस पाठ, भागवत पाठ और गीता पाठ किया गया। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा मनायी गयी। इसके साथ-साथ शनिवारों को चल सत्संग विष्णुसहस्रनाम पाठ, हनुमान चालीसा और गीता पाठ सहित किये गये।

चाँदपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग शनिवार को, गुरु पादुका पूजा गुरुवार को और चल सत्संग ८ और २४ को चलते रहे, ५ अगस्त को सद्गुरुदेव का ५५ वाँ आराधना दिवस नगर संकीर्तन, पादुका पूजा तथा गुरुदेव के जीवन और शिक्षाओं पर प्रवचनों सहित मनाया गया।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा तथा प्रत्येक गुरुवार को नियमित सत्संग और भागवत पारायण, मासिक जयन्ती दिवसों ८ एवं २४ को पादुका पूजा और अर्चना की जाती रही। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा मनायी गयी तथा बिस्कुट, मिठाई और फल कुष्ठ रोगियों में बाँटे गये। २८ जुलाई से ३ अगस्त तक ध्यान कक्षाएँ तथा २८ को सुन्दरकाण्ड पाठ भी किया गया।

दलभनपुर (ओडिशा): दैनिक योग कक्षाएँ और मंगलवारों को साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम चलता रहा। ७, १५ और २१ जुलाई को गीता, भागवत और हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। २७ को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा सहित मनायी गयी।

ढेंकानाल (ओडिशा): शाखा द्वारा गुरुपूर्णिमा २७ जुलाई को, गुरुदेव का ५५ वाँ आराधना दिवस ५ अगस्त को भजनों और गुरुतत्त्व पर प्रवचनों सहित मनाये गये।

गहम, अनगुल (ओडिशा): अगस्त माह में शाखा द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किये गये जिनके माध्यम से निर्धन रोगियों को चिकित्सा सेवा उपलब्ध करायी गयी। चिदानन्द सैन्टेनरी चैरिटेबल डिस्पेंसरी के माध्यम से ५५६ निर्धन रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा तथा औषधियाँ उपलब्ध करायी गयी।

गाँधीनगर (गुजरात): दैनिक दो सत्रों में योगासन कक्षाएँ, रविवारों को साप्ताहिक सत्संग शाखा द्वारा निर्धन रोगियों एवं ज़रूरतमन्दों को औषधियों सहित वित्तीय सहायता दी गयी। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा सहित मनायी गयी।

गोपीनाथपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजाएँ, सायंकालीन सत्संग, गुरुवारों को पादुका पूजा, एकादशियों को नाम रामायण संकीर्तन के कार्यक्रम चलते रहे। गुरुपूर्णिमा और सद्गुरुदेव का आराधना दिवस २७ जुलाई से ५ अगस्त तक पादुका पूजा, ब्रह्मसूत्रों का स्वाध्याय, गीता पाठ, रामचरितमानस पर प्रवचन और हवन सहित मनाया गया, समापन प्रसाद वितरण से हुआ। तुलसीदास जयन्ती १७ अगस्त को मनायी गयी।

जमशेदपुर (झारखण्ड): शाखा द्वारा शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग चलते रहे; प्रत्येक रविवार को अन्त्योदय बस्ती के निर्धन बालकों के लिए नि:शुल्क चित्रकारी एवं योग कक्षाएँ आयोजित की जाती रहीं तथा विद्यार्थियों को रंगों की पैंसिलें एवं कापियाँ बाँटी गयीं। २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा सहित मनायी गयी।

जयपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, चल सत्संग एवं साप्ताहिक सत्संग रविवार और गुरुवारों को

यथावत् चलते रहे। श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के मासिक जयन्ती दिवस को पूजा और हवन तथा १५ जुलाई को गीता यज्ञ किया गया। २७ जुलाई को श्री गुरुपूर्णिमा प्रार्थनाओं, पादुका पूजा, विष्णुसहस्रनाम पाठ, भजन-कीर्तन आदि सहित मनायी गयी। कोरापुट डिस्ट्रिक्ट धर्मार्थ होमियोपैथी निःशुल्क डिस्पेंसरी द्वारा लगभग ३०० रोगियों का उपचार किया गया।

कबिसूर्यनगर (ओडिशा): दैनिक अन्नदान और गुरुवार एवं रविवार को साप्ताहिक सत्संग चलते रहे। तत्त्वबोध और भागवत महापुराण पर ६ से १० अगस्त तक नित्य दो सत्रों में प्रवचन आयोजित किये गये।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा दैनिक महामृत्युञ्जय मन्त्र जप एवं दुर्गासप्तशती पाठ किये जाते रहे। १५ अगस्त, नाग पञ्चमी और स्वतंत्रता दिवस को रुद्राभिषेक, भजन-संकीर्तन सहित सत्संग करके मनाया गया। श्रावण मास में शिवसहस्रनामावली का पारायण किया गया।

काकचिंग (मणिपुर): दैनिक योगासन कक्षाएँ, सोमवारों को रुद्राभिषेक और पादुका पूजा, गुरुवारों और प्रत्येक ८ को भजन-कीर्तन सहित विशेष सत्संग शाखा के नियमित कार्यक्रम रहे। २७ जुलाई को व्यास पूजा और गीता पाठ सहित गुरुपूर्णिमा मनायी गयी।

खातिगुडा (ओडिशा): शाखा द्वारा २८ जुलाई से ३ अगस्त तक भागवत सप्ताह आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त दैनिक पूजा, प्रत्येक गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा साधना दिवस और सद्गुरुदेव का ५५ वाँ आराधना दिवस ५ अगस्त को प्रार्थना, नगर संकीर्तन और पादुका पूजा तथा रात्रि को विशेष सत्संग सहित मनाये गये। ७ और २२ एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पाठ किया गया।

लखनऊ (उत्तर प्रदेश): लेखराज होम्ज़ में शाखा द्वारा अगस्त मास में २६ को प्रार्थना, भजन, मन्त्र जप और स्वाध्याय आदि सहित सत्संग हुआ।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक योगासन कक्षा और सत्संग, साप्ताहिक सत्संग, प्रत्येक गुरुवार को चल सत्संग, शनिवार को सुन्दरकाण्ड एवं हनुमान चालीसा सहित मातृ सत्संग किये जाते रहे। ३ जुलाई को महामन्त्र कीर्तन किया गया। २७ जुलाई को पादुका पूजा सहित गुरुपूर्णिमा मनायी गयी।

पंचकूला (हरियाणा): शाखा द्वारा भक्तों के आवास-स्थानों पर प्रार्थना, स्वाध्याय, महामृत्युञ्जय आदि मन्त्रों के जप सहित साप्ताहिक सत्संग चलते रहे। ८ अगस्त को नारायण सेवा की गयी। १६ अगस्त को विशेष सत्संग श्री स्वामी अखिलानन्द जी और श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी की उपस्थिति में किया गया जिसमें भजन, दिव्यनाम के महत्त्व पर प्रवचन और श्री रामचरितमानस का पाठ हुआ। इसके अतिरिक्त दुर्गा कुष्ठाश्रम में जा कर भजन-सत्संग और समापन पर नारायण सेवा का आयोजन किया गया।

पुरी (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को सत्संग, रविवार को पादुका पूजा सहित नियमित रूप से विशेष सत्संग, प्रत्येक एकादशी को विष्णुसहस्रनाम पारायण यथावत् चलते रहे।

राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक ध्यान और योग कक्षा, प्रत्येक गुरुवार को सत्संग, प्रत्येक रविवार को चल सत्संग, प्रत्येक मास की ८ और २४ को पादुका पूजा, अभिषेक, अर्चना, विष्णुसहस्रनाम पाठ तथा सायंकालीन सत्संग चलते रहे। निःशुल्क एक्यूप्रैशर चिकित्सा एवं जरूरतमन्दों के लिए निःशुल्क औषधियाँ दी जाती रहीं। २७ जुलाई को श्री गुरुपूर्णिमा और ५ अगस्त को सद्गुरुदेव का आराधना दिवस शाखा द्वारा मनाये गये।

सुनाबेडा और सुनाबेडा महिला शाखा (ओडिशा): जुलाई-अगस्त मासों में शाखा द्वारा महामन्त्र संकीर्तन, गीता पाठ, भागवत पाठ और जप सहित दैनिक सायंकालीन सत्संग, रविवार, मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को साप्ताहिक सत्संग, एकादशी को अभिषेक, गीता

पाठ और विष्णुसहस्रनाम पाठ तथा संक्रान्ति और साधना दिवस को सुन्दरकाण्ड पाठ इत्यादि के कार्यक्रम चलते रहे। पादुका पूजा और हवन सहित गुरुपूर्णिमा तथा सद्गुरुदेव का ५५ वाँ आराधना दिवस नारायण सेवा सहित मनाया गया। १९ को साधना दिवस मनाया गया।

साउथ बलांडा (ओडिशा): दैनिक पूजा, प्रत्येक शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ एवं २४ को पादुका पूजा आदि नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। १७ जुलाई को विशेष सत्संग आयोजित किया गया। २७ जुलाई को पादुका पूजा, गीता पाठ और महामन्त्र संकीर्तन सहित गुरुपूर्णिमा मनायी गयी।

उपालदा (ओडिशा): दैनिक पूजा, गुरुवारों को साप्ताहिक सत्संग, एकादशियों को विष्णुसहस्रनाम पाठ और संक्रांति को अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन शाखा के नियमित कार्यक्रम चलते रहे। २७ को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा एवं नाम संकीर्तन सहित मनायी गयी।

राजा पार्क शाखा, जयपुर (राजस्थान): शाखा द्वारा दैनिक पूजाओं, साप्ताहिक पूजा, पारायण, हवन, सत्संग इत्यादि की आध्यात्मिक गतिविधियाँ; ज्ञान-प्रसार, स्वास्थ्य, अन्नदान एवं जल सेवा के सेवार्थ कार्यक्रम सभी पूर्ववत् नियमित रूप से चलते रहे। विशेष कार्यक्रम : १० और २४ जुलाई प्रदोष दिवस पर संध्या सत्संग में १ घण्टा पञ्चाक्षरी मन्त्र जप, समापन पर प्रार्थना, आरती और प्रसाद बाँटा गया। २७ को गुरुपूर्णिमा पादुका पूजा, अर्चना, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र सहित पूजा, आरती और प्रसाद वितरण तथा सायंकालीन सत्संग सहित मनायी गयी। २८ को श्रावण मास के उपलक्ष्य में रुद्राभिषेक प्रारम्भ किया गया जो ६ अगस्त तक चला।

दिव्य जीवन संघ, श्री कृष्ण मन्दिर, गुड़गाँव (हरियाणा): शाखा द्वारा फरवरी-मार्च मास में प्रत्येक सोमवार को सायंकालीन महिला सत्संग में संकीर्तन, एकादशियों को कथा एवं हवन, पूर्णिमा को श्री सत्यनारायण कथा-वाचन, अन्तिम रविवार को विशाल भण्डारा इत्यादि नियमित कार्यक्रम चलते रहे। ५.२.१८ को श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि पर सुन्दरकाण्ड पाठ, पादुका पूजा और भण्डारा, १४.२ महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक, भजन-कीर्तन एवं प्रसाद वितरण, १२.३ से १६.३ तक श्री हनुमान चरित कथा वाचन, १८.३ को श्री दुर्गा कलश स्थापना, २४.३ को श्री दुर्गा सप्तशती यज्ञ, २५.३ को श्री रामनवमी को श्री राम जन्मोत्सव कार्यक्रम तथा ३१.३ को श्री हनुमान जयन्ती पर १०८ हनुमान चालीसा पाठ, कीर्तन, प्रवचन और प्रसाद वितरण किया गया।

फरीदपुर, बरेली (उत्तर प्रदेश): प्रत्येक बुधवार को साप्ताहिक सत्संग, निर्धनों को भोजन तथा निर्धन कन्याओं के विवाह में सहयोग इत्यादि शाखा की सेवाएँ पूर्ववत् चलती रहीं। निर्धनों की शीतकालीन सेवा का कार्यक्रम चलता रहा। श्री गुरुपूर्णिमा पर विशेष सत्संग में पादुका पूजा, भजन और नारायणसेवा, देवार्चना सप्तम पुष्प का विमोचन परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा किया गया फिर उसका निःशुल्क वितरण किया गया। रक्षाबन्धन, स्वतंत्रता दिवस एवं अटल श्रद्धांजलि का भी आयोजन किया गया।

विदेशी शाखाएँ

मलेशिया : शाखा द्वारा २७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा, २८ से ४ अगस्त तक साधना सप्ताह और ५ अगस्त को सद्गुरुदेव का ५५ वाँ आराधना दिवस दैनिक पादुका पूजा, भजन, कीर्तन, आध्यात्मिक प्रवचनों सहित मनाया गया तथा गुरुदेव के संदेशों की ३ पुस्तकें निःशुल्क वितरण हेतु छापी गयीं। ५ अगस्त को नादस्वरम्, भजन एवं कीर्तन सहित रथ यात्रा निकाली गयी।

◆ ◆ ◆

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

सूचना

युग्म प्लेटिनम जुबली महोत्सव का कार्यक्रम

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।

द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।। श्रीमद्भागवतम्–१२–३–५२

सतयुग में जो ध्यान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, त्रेतायुग में तपश्चर्या द्वारा और द्वापरयुग में भगवान् श्री कृष्ण के चरणकमलों की पूजा से प्राप्त किया जा सकता है, वह कलियुग में केवल भगवन्नाम के महिमा का गान करने से ही प्राप्त हो जाता है।

३ दिसम्बर तथा ३१ दिसम्बर २०१८ क्रमशः भजन हाल में आयोजित अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ प्रारम्भ होने तथा श्री विश्वनाथ भगवान् की विश्वनाथ मन्दिर में प्रतिष्ठा होने की प्लेटिनम जुबली के पावन अवसर हैं। इस पावन युग्म प्लेटिनम जुबली के शुभ अवसर के उपलक्ष्य में मुख्यालय आश्रम ने निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन करने का निश्चय किया है :–

२० सितम्बर से ३ दिसम्बर २०१८ तक	भजन हाल में विभिन्न डी.एल.एस. शाखाओं द्वारा महामन्त्र कीर्तन।
२७ से ३० सितम्बर तक	पूज्य श्री हित अम्बरीश जी महाराज द्वारा 'उद्धव गीता' पर प्रवचन।
२८ नवम्बर से ३० नवम्बर २०१८ तक	आध्यात्मिक सम्मेलन।
१ दिसम्बर २०१८	नौका संकीर्तन।
३ दिसम्बर २०१८	महामन्त्र संकीर्तन सहित शोभा यात्रा।
४ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक	श्री विश्वनाथ मन्दिर में पञ्चाक्षरी मन्त्र संकीर्तन
३१ दिसम्बर २०१८	श्री विश्वनाथ भगवान् का महापूजन।
२० सितम्बर से ३१ दिसम्बर २०१८ तक	प्रतिदिन प्रभातफेरी होगी।

इन महिमामयी अवसरों के उपलक्ष्य में आध्यात्मिक सम्मेलन के समय एक स्मारिका का विमोचन करने का भी विचार है।

इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए सभी भक्त आमन्त्रित हैं।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

Registrar of Newspapers for India
No. 71610/99

Postal-Registration No. TRI/005/2018-20

अक्तूबर २०१८

LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
(Licence No. WPP No. 02/18-20, Valid upto: 31-12-2020)
Posted at Shivanandanagar, Tehri-Garhwal, Uttarakhand
DATE OF POSTING : 20TH OF EVERY MONTH:
P.O. SHIVANANDANAGAR—249192

भारत माता का वैभव

भारत एक आध्यात्मिक देश है। भारत ने उपनिवेशों या पड़ोसी राष्ट्रों पर कभी आक्रमण नहीं किया। उसको सैन्य-विजय की महत्त्वाकांक्षा कभी न थी। उसने हमेशा अपनी प्रजा के लिए आत्म-स्वराज्य चाहा है। उसने अपनी प्रजा को दूसरों पर शासन करने के लिए कभी प्रेरित नहीं किया। वह अपने पुत्रों से यही अपेक्षा रखती है कि वे अपनी आन्तरिक और बाह्य प्रकृति पर विजय पायें। वह चाहती है कि उसकी सन्तान आत्मज्ञान से उत्पन्न सुन्दर और दिव्य गुणों, नैतिक शक्तियों और आध्यात्मिक अन्तर्बल से परिपुष्ट हो। दूसरों के मन को जीतने और आध्यात्मिक विजय प्राप्त करने का एकमात्र साधन अहिंसा है।

भारतीयों का अन्तिम लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार है। उनको भौतिक समृद्धि तथा भौतिक प्रगति की चिन्ता नहीं है। उनको योग प्रिय है। वे अहिंसा, सत्य तथा ब्रह्मचर्य की साधना करते हैं। अनन्त आत्मा के शाश्वत आनन्द को पाने की वे इच्छा रखते हैं। वे अन्तरात्मा या ब्रह्म का साक्षात्कार करने तथा सांसारिक सम्पत्ति का त्याग करने के लिए हमेशा तैयार हैं। अविनाशी आत्मा की प्राप्ति के निमित्त वे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर डालते हैं। उनका चित्त सर्वदा अध्यात्ममय रहता है।

भारत योगियों, ऋषियों तथा मुनियों का देश है। हिमालय पर्वत का दृश्य कितना रमणीय है! गंगा माता कितनी मधुर हैं! हे गंगे! आपकी तरंगें कितनी मनोहर और स्फूर्तिदायिनी हैं! योगियों का सान्निध्य कितना आत्म-प्रेरक है! इन योगियों तथा गंगा और हिमालय से युक्त ऋषिकेश कितना सुन्दर और प्रिय है! यदि आपकी इच्छा योगाभ्यास करने की है, तो भारत आइए और ऋषिकेश में ठहरिए। एकान्त-वास की शान्ति प्राप्त कीजिए। आत्मानन्द का अनुभव कीजिए। मौन ध्यान कीजिए। अखण्ड मौन में प्रवेश कीजिए। आप योगी बनें!

—स्वामी शिवानन्द

सेवा में

'द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी' की ओर से स्वामी विमलानन्द द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९ १९२' से मुद्रित तथा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्य कार्यालय, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९ १९२' से प्रकाशित। फोन : ०१३५-२४३००४०, २४३११९०
E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org ; Website : www.sivanandaonline.org ; www.dlshq.org
सम्पादक : स्वामी निर्लिप्तानन्द